ओ३म्

दयानन्दसन्देश

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का मासिक पत्र

जून २०१४

वर्ष ४३ : अङ्क ८
दयानन्दाब्द : १९१
विक्रम-संवत् : ज्येष्ठ-आषाढ़ २०७१
सृष्टि-संवत् : १,९६,०८,५३,११५

संस्थापक : स्व० ला० दीपचन्द आर्य
सम्पादक (अवैतनिक) : राजवीर शास्त्री
प्रकाशक व प्रबन्ध सम्पादक: धर्मपाल आर्य
सम्पादक : डॉ. अशोक कुमार
व्यवस्थापक : विवेक गुप्ता

कार्यालय :

दयानन्दसन्देश (मासिक)

४२७, नया बांस, मन्दिर वाली गली,
खारी बावली, दिल्ली-६
दूरभाष : २३९८५५४५, ४३७८११९१
चलभाष : ९६५०६२२७७८
E-mail : aspt.india@gmail.com

एक प्रति ५.०० रु०
वार्षिक शुल्क ५०) रुपये
आजीवन सदस्यता ५००) रुपये
विदेश में २०००) रुपये

इस लेख में

- ❑ वेदोपदेश २
- ❑ नया जनादेश... ४
- ❑ इतिहास को ६
- ❑ कुछ तड़प कुछ झड़प १२
- ❑ विचारों की १७
- ❑ ऋषि दयानन्द..... १९
- ❑ देश शक्तिशाली..... २१
- ❑ सत्य की महिमा २६

सत्यार्थप्रकाश

प्रचार संस्करण ३००० रुपये सैकड़ा
स्पेशल (सजिल्द) ५००० रुपये सैकड़ा में प्राप्त करें।

ओ३म्

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। महर्षि दयानन्द

परमेष्ठी प्रजापतिः ऋषिः। **यज्ञो=देवता सर्वस्य।।** आदौ संवमापीत्यस्य **गायत्री। षड्जः स्वरः। अन्त्यस्य निचृत् पंक्तिश्छन्दः पञ्चमः स्वरः। ईश्वरेण याभ्य ओषधिभ्योऽन्नादिकं जायते ताः कथं शुद्धा जायन्त इत्युपदिश्यते।।** ईश्वर ने जिन औषधियों से अन्न आदि उत्पन्न होता है वे कैसे शुद्ध होती हैं इस विषय का उपदेश किया है।

ओ३म् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सं वपामि समापऽओषधीभिः समोषधयो रसेन। सꣳरेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्ताꣳ सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्।। यजु० 1/२१।।

पदार्थः (देवस्य) विधातुरीश्वरस्य द्योतकस्य सूर्य्यस्य वा **(त्वा)** तं त्रिविधं यज्ञम् **(सवितुः)** सवति=सकलैश्वर्य्यं जनयति तस्य **(प्रसवे)** उत्पादितेऽस्मिन् संसारे **(अश्विनोः)** प्रकाशभूम्योः। **द्यावापृथिव्यावित्येके।। निरु. 12/1।। (बाहुभ्याम्)** तेजोदृढत्वाभ्याम् **(पूष्णः)** पुष्टिकर्त्तुर्वायोः। **पूषेति पदनामसु पठितम्।। निघं. 5/6।। अनेन पुष्टिहेतुर्गृह्यते (हस्ताभ्याम्)** प्राणापानाभ्याम् **(सम्)** सम्यगर्थे **(वपामि)** विस्तारयामि **(सम्)** सम्मेलने। **समित्येकीभावं प्राह।। निरु. 1/3।। (आपः)** जलानि। **आप इत्युदकनामसु पठितम्।। निघं. 1/12।। (ओषधीभिः)** यवादिभिः। **ओषधय ओषद् धयन्तीति वौषत्येना धयन्तीति वा दोषं धयन्तीति वा।। निरु. 9/27।। (सम्)** सम्यगर्थे **(ओषधयः)** यवादयः। **ओषध्यः फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः।। मनुस्मृतौ। अ. 1। श्लोक 46।। (रसेन)** सारेणाद्रेणानन्दकारकेण **(सम्)** प्रशंसार्थे **(रेवतीः)** रेवत्य=आपः। **अत्र सुपां सुलुगिति पूर्वसवर्णादेशः (जगतीभिः)** उत्तमाभिरोषधीभिः **(पृच्यन्ताम्)** मेल्यन्ताम् पृच्यन्ते वा **(सम्)** श्रैष्ठये **(मधुमतीः)** मधुः प्रशस्तो रसो विद्यते यासु ता मधुमत्य आपः। **अत्र प्रशंसार्थे मतुप्। सुपां सुलुगिति पूर्वसवर्णादेशश्च (मधुमतीभिः)** मधुर्बहुविधो रसो वर्तते यासुताभिरोषधीभिः। **अत्र भूमार्थे मतुप् (पृच्यन्ताम्)** युक्तया वैद्यकशिल्पशास्त्ररीत्या मेल्यन्ताम्।। **अयं मंत्रः शं. 1/1/6/1-2 व्याख्यातः** ।।21।।

सपदार्थान्वयः हे मनुष्या! यथाऽहं सवितुः सवति=सकलैश्वर्य्यं जनयति तस्य **देवस्य=परमात्मनो** विधातुरीश्वरस्य द्योतकस्य सूर्यस्य वा **प्रसवे=सवितृमण्डलस्य प्रकाशे** उत्पादितेऽस्मिन् संसारे **चाऽश्विनोः** प्रकाशभूम्योः **बाहुभ्यां** तेजोदृढ़त्वाभ्यां **पूष्णः** पुष्टिकर्तुर्वायोः **हस्ताभ्यां** प्राणाऽपानाभ्यां **यमिमं यज्ञं सम्. वपामि** सम्यग् विस्तारयामि **तथैव त्वा =तं** तं त्रिविधं यज्ञं **यूयमपि संवपत।**

यथतस्मिन् प्रसवे=प्रकाशे उत्पादितोऽस्मिन् संसारे **चौषधीभिः** यवादिभिः **आपः** जलानि **ओषधयः** यवादयो **रसेन** सारेणाऽऽर्द्रेणाऽऽनन्दकारकेण। **जगतीभिः** उत्तमाभिरोषधीभिः **(रेवतीः)=रेवत्य** आपः **च संपृच्यन्ते** (संमेल्यन्ते)।

यथा च मधुमतीभिः मधु=बहुविधो रसो वर्तते यासु ताभिरोषधीभिः **(मधुमतीः)=मधुमत्यो** मधु=प्रशस्तो रसो विद्यते यासु ता मधुमत्य आपः **सम् पृच्यन्ते, तथैवौषधीभिः** यवादिभिः **ओषधयः** यवादयः **औषधयो रसेन** सारेणऽऽर्द्रेणानन्दकारकेण **जगतीभिः** उत्तमाभिरोषधीभिः **सह (रेवतीः) = रेवत्य** आपः **चाऽस्माभिः सम्ऽपृच्यन्ता** सम्यङ् मेल्यन्तां पृच्यन्ते वा।

एवं मधुमतीभिः मधु=बहुविधो रसो वर्तते यासु ताभिरोषधीभिः **सह (मधुमतीः)=मधुमत्यो** मधु=प्रशस्तो रसो विद्यते यासु ता मधुमत्य आपो **नित्यं सम् . पृच्यन्तां** प्रशस्तया युक्त्या वैककशिल्पशास्त्ररीत्या मेल्यन्ताम्।। 1/21।।

भाषार्थ : हे मनुष्यो! जैसे मैं **(सवितुः)** सकल ऐश्वर्य जनक **(देवस्य)** विधाता परमात्मा के अथवा प्रकाशक सूर्य के **(प्रसवे)** उत्पन्न किये इस संसार में अथवा प्रकाश में **(अश्विनोः)** प्रकाश और भूमि के **(बाहुभ्याम्)** तेज और दृढ़ता से तथा **(पूष्णः)** पुष्टिकर्ता वायु के **(हस्ताभ्याम्)** प्राण और अपान रूप हाथों से इस यज्ञ का **(संवपामि)** भली भांति विस्तार करता हूं वैसे **(त्या)** उस तीन प्रकार के यज्ञ का तुम भी विस्तार करो।

जैसे इस **(प्रसवे)** उत्पन्न संसार में एवं सूर्य के प्रकाश में **(ओषधीभिः)** यव-आदि ओषधियों से **(आपः)** जल तथा **(ओषधयः)** यव-आदि औषधियां और **(रसेन)** आनन्दकारक रस से तथा **(जगतभिः)** उत्तम ओषधियों से **(रेवत्यः)** जल **(संपृच्यन्ते)** मिलाये जाते हैं।

और-जैसे **(मधुमतीभिः)** बहुत प्रकार के मधुर रस से परिपूर्ण औषधियों से **(मधुमतीः)** उत्तम मधुर रस वाले जल मिलाये जाते हैं वैसे ही **(ओषधीभिः)** यव-आदि ओषधियों से **(ओषधयः)** यव आदि ओषधयां एवं ओषधियों को **(रसेन)** आनन्नकारक रस तथा **(जगतीभिः)** उत्तम औषधियों के साथ **(रेवतीः)** और जलों को हम लोग **(सम्पृच्यन्ताम्)** भली भांति मिलावें।

इस प्रकार **(मधुमतीभिः)** बहुत प्रकार के रस वाली औषधियों के साथ **(मधुमतीः)** उत्तम रस वाले जल सदा **(संपृच्यन्ताम्)** प्रशस्त युक्तिपूर्वक वैद्यक और शिल्पशास्त्र की रीति से मिलावें।।1।21।।

भावार्थः अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। विद्वद्भिर्मनुष्यरीश्वरोत्पादिते सूर्यप्रकाशितेऽस्मिन् जगति बहुविधानां संप्रयोक्तव्यानां द्रव्याणां संप्रयोक्तुमर्हैर्बहुविधैर्द्रव्यैः सह संमेलनेन त्रिविधो यज्ञो नित्यमनुष्ठेयः।

यथा जलं स्वरसेनौषधीर्वर्धयति, ता उत्तमरसो योगाद्रोगनाशकत्वेन सुखदायिन्यो भवन्ति, यथेश्वर कारणात्कायं यथावद्रचयति, सूर्यः सर्वं जगत् प्रकाश्य सततं रसं भित्वा पृथिव्याद्याकर्षति, वायुचधारयित्वा पुष्णाति, तथैवाऽस्माभिरपि यथावत्संस्कृतैः संप्रयोजितैर्द्रव्यैर्विद्वत्संगविद्योन्नति -होमशिल्पाख्यैर्यज्ञैर्वायुवृष्टि जलशुयद्धश्व सदैव कार्या इति।।1/21।।

भावार्थ इस मंत्र में लुप्तोपमा अलंकार है। विद्वान् मनुष्यों को ईश्वर के द्वारा उत्पन्न किये तथा सूर्य से प्रकाशित इस जगत् में बहुत प्रकार के परस्पर मिलाने योग्य द्रव्यों के साथ मिलाकर तीन प्रकार का

(शेष पृष्ठ 16 पर)

नया जनादेश - नई सरकार - नई चुनौती

(धर्मपाल आर्य, २ एफ, कमला नगर, दिल्ली-७)

सोलहवीं लोकसभा के गठन का प्रारूप 1.25 अरब की आबादी वाले लोकतन्त्रात्मक विशाल भारत ने 16 मई को तय कर दिया। 2014 का आम चुनाव पिछले सभी आम चुनावों से अलग रहा है। भारतीय लोकतन्त्र के इतिहास में ये चुनाव कई अभूतपूर्व प्रसंग जोड़ चुका है जो देश की भावी राजनीति की दिशा और दशा का कायाकल्प करने में कारगर सिद्ध होंगे। अबकी बार चुनाव परिणामों ने राजनीतिक पण्डितों की भविष्यवाणी से काफी आगे छलांग भरी है जिसे देखकर राजनीतिक दलों के साथ-साथ उसके पण्डितों में लम्बी बहस छिड़ी हुई है। जो व्यूह भाजपा और उसके प्रस्तावित प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार श्री नरेन्द्र मोदी के विरुद्ध समस्त राजनीतिक दलों ने बनाया था; जिस प्रकार कूटनीतिक घेराबन्दी करने की कोशिश की, जिस प्रकार एक व्यक्ति विशेष का एक वर्ग (समुदाय) विशेष को भय दिखाने की कोशिश की; जिस निर्लज्जता के साथ नरेन्द्र मोदी के लिए असंसदीय भाषा का इस्तेमाल किया गया, जिस प्रकार एक पार्टी और एक व्यक्ति को रोकने के लिए स्वाभाविक और अस्वाभाविक अवसरवादी गठबन्धन किए गए लेकिन इन सब अवरोधों को पार करते हुए, अपने लिए असंसदीय भाषा को अनदेखा करते हुए, सारे स्वाभाविक-अस्वाभाविक गठबन्धनों को पोल करते हुए नरेन्द्र मोदी ने अपने करिश्माई व्यक्तित्व के प्रभाव से, यू.पी. के प्रभारी अमित शाह के कुशल राजनीतिक प्रबन्धन से विरोधियों के सारे राजनैतिक समीकरण और ध्रुवीकरण न केवल ध्वस्त कर दिये गये अपितु राजनीति के इतिहास में कई कीर्तिमान भी स्थापित किए गए। यह बात सही हो सकती है कि राजनीति में हार जीत चलती रहती है लेकिन अप्रत्याशित हार और अप्रत्याशित जीत होना यह अपने आप में महत्वपूर्ण घटना है जिसका अध्ययन राजनीतिक विशेषज्ञों के लिए अपरिहार्य है। जो जनादेश राजनीतिक पण्डितों व विशेषज्ञों के लिए विश्लेषण का विषय हो, जो जनादेश सभी राजनीतिक दलों (चाहे जीतने वाला हो या हारने वाला) के लिए अप्रत्याशित हो हर प्रकार से अपने आपमें अनूठा नया जनादेश भारतीय जनता पार्टी को प्राप्त हुआ है। भाजपा को स्पष्ट जनादेश क्या मिला शेयर बाजार खुशी से झूम उठा और बाकी दलों (विशेषकर सपा, बसपा और कांग्रेस) में अफरातफरी का माहौल पैदा हो गया। भाजपा बनाम एन.डी.ए. को मिले आशातीत जनादेश से सभी सकते में है। जैसे-जैसे 26 तारीख नजदीक आती जा रही है वैसे-वैसे भाजपा नीत एन.डी.ए. सरकार आकार लेती जा रही है। यदि मैं गलती नहीं कर रहा हूं तो भारत के इतिहास में शायद ऐसा पहली बार हो रहा है जब किसी सरकार ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में प्रमुख पड़ोसी राष्ट्रों के अध्यक्षों को शामिल होने का निमन्त्रण भेजा हो। सभी ने निमन्त्रण को स्वीकार किया सिर्फ पाकिस्तान को छोड़कर। यह निमन्त्रण पाकिस्तानी हुक्मरानों के लिए कई दिनों तक 'न निगलते बना न उगलते बना' वाली स्थिति बनी रही आखिर काफी जद्दोजहद के बाद आधिकारिक तौर पर पाकिस्तानी विदेश मन्त्रालय ने पाक प्रधानमन्त्री नवाज शरीफ के मोदी सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में आने की पुष्टि की। प्रमुख पड़ोसी राष्ट्राध्यक्षों को भेजे गए निमन्त्रण को राजनीतिक विशेषज्ञ केवल निमन्त्रण ही नहीं अपितु उसे एक कूटनीतिक पहल के रूप में भी देख रहे हैं। पाकिस्तान ने इस निमन्त्रण के कूटनीतिक मायने तो अवश्य ही निकाले होंगे अन्यथा उसे स्वीकार करने में इतना समय नहीं लगता। पाकिस्तान का राजनैतिक वातावरण उथल-पुथल तथा शंकाओं, आशंकाओं से भरा रहता है। वहां के राजनीतिक दल, वहां के आतंकवादी संगठन तथा वहां की सेना एक दूसरे को शक की नजर

से देखते हैं। वहां सत्ता पर कौन, कब कैसे हावी हो जाए यह भविष्यवाणी करना काफी कठिन काम है। वहां सत्ता के तीन प्रमुख केन्द्र हैं। सत्ताधारी पार्टी, सेना अैर आतंकवादी संगठन। यद्यपि यह वहां का आन्तरिक मामला है लेकिन राजनीति के धरातल पर पड़ोसी राष्ट्रों (विशेषकर पाकिस्तान) के आन्तरिक मामले पड़ोसी राष्ट्र (विशेषकर भारत) के साथ अच्छे अथवा बुरे सम्बन्धों की बुनियाद खड़ी करते हैं। नया जनादेश प्राप्त कर बनी नई सरकार के समक्ष कई नई-पुरानी चुनौतियां हैं। जिनसे सरकार को दो-चार होना पड़ेगा। यह आने वाला समय बतायेगा कि चुनौतियां सरकार पर भारी पड़ती हैं या सरकार चुनौतियों पर भारी पड़ती है। नरेन्द्र मोदी का एक वाक्य अर्थपूर्ण है जो उन्होंने संसद के केन्द्रीय कक्ष में हुई भाजपा संसदीय बोर्ड की बैठक में अपना उद्‌बोधन देते हुए कहा था कि ''वो अपना और अपनी सरकार का रिपोर्ट कार्ड 2019 के आम चुनावों में देंगे।'' देश के लिए उन्होंने परिश्रम की पराकाष्ठा की बात भी की है। श्री नरेन्द्र मोदी ने जितनी बार भी उद्‌बोधन दिया है उसमें उन्होंने भावी कार्यक्रम की रूपरेखा का संकेत देने का प्रयास किया है। लेकिन यह सत्य है कि प्रदेश में शासन उन्होंने जितने राजनैतिक कौशल से चलाया है देश में शासन चलाने के लिए उससे कई गुना अधिक राजनैतिक कौशल आवश्यक है। जिस राजा के पास जितना राजनैतिक कौशल होता है वह शासन चलाने में उतना ही सफल होता है। तुलसीदास ने ठीक ही लिखा है -

सोचिए नृपति जो नीति न जाना,
जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना।

महाभारत में भी महर्षि व्यास लिखते हैं कि

''न जात्वदक्षो नृपतिः प्रजाः शक्नोति रक्षितुम्।
भारो हि सुमहां स्तात राज्यं नाम सुदुष्करम्।।
तद्‌दण्डाविन्नृपः, प्राज्ञः शूरः शक्नोति रक्षितुम्।
नहि शक्यमदण्डेन क्लीबेनाबुद्धिनापि च।

अर्थात् हे राजन! अकुशल राजा प्रजा की रक्षा अकुशल राजा के लिए शासन चलाना दुष्कर तो है ही साथ-साथ उस अकुशल राजा के लिए राज्य एक बोझ भी है। बुद्धिमान, शूर और दण्डनीति को जानने वाला राजा ही प्रजा की रक्षा कर सकता है, न कि दण्डनीति से अनभिज्ञ, पापी और बुद्धिहीन शासक। मोदी बनाम भाजपानीत सरकार आन्तरिक और बाह्य राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियों से रुबरु होगी। अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद संघ में भारत की स्थायी सदस्यता की समस्या, चीन के साथ सीमा-विवाद की समस्या, पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण बनाने की समस्या, बांग्लादेश से भागे अथवा भगाये गये हिन्दू शरणार्थियों की समस्या तथा दाउद इब्राहीम को जिन्दा अथवा मुर्दा पकड़ने की समस्या आदि हैं तथा राष्ट्रीय समस्याओं में कश्मीर की धारा 370 की समस्या, शरणार्थी बने लाखों कश्मीरी पण्डितों को फिर से बसाने की समस्या, महंगाई की समस्या, नक्सलवाद की समस्या, गरीबी की समस्या, अशिक्षा की समस्या, अयोध्या-विवाद, भ्रष्टाचार व विदेशों में जमा काले धन की समस्या है। इनके अलावा भी समस्याएं हैं जिनसे कारगर ढंग से निपटने की मोदी सरकार को अतिरिक्त बुद्धि कौशल तथा नीति निपुणता की आवश्यकता रहेगी। राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर सरकार को चाहिए कि वो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के इस नियम को आगे रखें जिसमें उन्होंने लिखा है कि ''सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए। स्वामी जी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के राजप्रजा धर्म विषय में लिखते हैं ''

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं यज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निा।।

अर्थात् जहाँ ब्राह्मण (विद्यार्यसभा) विद्वान और राजा (राजार्य और न्यायार्य सभा) मिलकर शासन चलाते हैं वही देश शुभ क्रियाओं से युक्त होकर सुख समृद्धि और शान्ति को प्राप्त करते हैं।

❑❑

इतिहास को बिगाड़ती कहानियां (3)

(राजेशार्य आट्टा)

प्रिय पाठकवृन्द! संसार में बहुत प्राचीन काल से कहानियाँ, नाटक आदि सुने व लिखे जा रहे हैं। समाज में परिवर्तन लाने में कहानियों की भूमिका से मना नहीं किया जा सकता, पर ऐतिहासिक व्यक्तियों से जुड़ी कहानियां इतिहास को सही रूप से समझने में बाधा डालती हैं। कई कहानियाँ तो इतनी मनमोहक होती हैं कि उस विषय के जानकार भी उनका मोह नहीं छोड़ पाते, फिर सामान्य जन का क्या दोष?

हम बचपन में उपदेशकों के मुख से कहानियाँ सुनते थे कि दिल्ली के राजा अनंगपाल तोमर की दो बेटियां थी- बिमला और कमला। बिमला का बेटा था जयचन्द और कमला का था पृथ्वीराज चौहान। अनंगपाल की कोई संतान नहीं थी, अतः दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज चौहान को दे दिया गया। इससे जयचन्द और पृथ्वीराज में शत्रुता हो गई। आगे चलकर जयचन्द ने अपनी बेटी संयोगिता का स्वयंवर रचा। वह पृथ्वीराज से प्रेम करती थी। अतः पृथ्वीराज उसे अपहरण कर ले गया। बदला लेने के लिए जयचन्द ने मुहम्मद गौरी की सहायता कर पृथ्वीराज को बन्दी बनवाया।

कुछ बड़े हुए तो बुद्धि ने इस कहानी को मानने से इनकार कर दिया। क्योंकि यदि वे दोनों मौसेरे भाई थे, तो संयोगिता पृथ्वीराज चौहान की भतीजी थी। फिर यह बेहूदी कहानी कैसे घट गई? जानकार लोगों से पूछा तो उत्तर मिला कि ऐसा 'पृथ्वीराज रासो' में लिखा है और यही समाज में प्रचलित है। मन ने विद्रोही होकर कहा- मैं ऐसे ग्रन्थ को सत्य नहीं मानता। जिज्ञासा भाव से कुछ इतिहास ग्रन्थों को देखा, तो डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द के विचारों को अपनी मान्यता के निकट पाया। बाद के बहुत से इतिहासकारों को उनका समर्थन करते हुए देखा, पर समाज में अभी भी वही कहानी प्रचलित है। और यह दोहा भी खूब प्रचलित है-

चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान।।

इसके विषय में कहा जाता है कि यह दोहा 'पृथ्वीराज रासो' के लेखक कवि चन्द्रबरदाई ने अफगानिस्तान में मुहम्मद गौरी द्वारा अंधे बनाए हुए पृथ्वीराज चौहान को शब्द बेधी बाण चलाकर सुल्तान मुहम्मद गौरी को मारने की प्रेरणा देते हुए कहा गया था। यह केवल अनपढ़ समाज में ही प्रचलित हो, ऐसा नहीं है। देवीसिंह मंडावा ने 'सम्राट पृथ्वीराज चौहान' में रासो के विपरीत यही माना है कि पृथ्वीराज चौहान को बन्दी बनाकर कुछ समय बाद मुहम्मद गौरी ने अजमेर में मरवा दिया था। फिर भी पुस्तक के अंत में 'चार बांस ....' वाली कहानी विस्तार से लिखी है। 'संघ मार्ग' (जनवरी 2014) में यह कहानी लिखकर यह भी लिख दिया कि 1192 ई. में यह घटना भी वसंत पंचमी वाले दिन ही हुई थी।

जबकि इतिहास बताता है कि मुहम्मद गौरी 1192 ई. में नहीं, 1206 ई. में लाहौर से गजनी लौटते समय गक्खरों (खोखर जाटों) के हाथ से मारा गया था। तब तक वह भारत में इस्लामिक राज्य की स्थापना अच्छी तरह कर चुका था। कल्पना और इतिहास के मिश्रण के कारण ही हमारा इतिहास काव्य बनकर रह गया।

इतिहास की यह विडम्बना देखिये कि पाश्चात्य इतिहास लेखक श्रीकृष्ण द्वारा अदृश्य रूप में द्यूत सभा में द्रौपदी का वस्त्र बढ़ाने जैसे चमत्कारिक घटनाओं के कारण महाभारत को काल्पनिक मानते हैं, पर वे ही लेखक ईसा मसीह द्वारा मुर्दों को जिन्दा करने जैसे चमत्कारों को इतिहास मानते हैं। जबकि दोनों यथार्थ

से परे हैं। महाभारत का उपरोक्त प्रसंग महाभारत की अन्तः साक्षी के कारण प्रक्षिप्त है और किसी श्रद्धालु भक्त ने श्रीकृष्ण को चमत्कारिक शक्ति (परमात्मा) सिद्ध करने के लिए जोड़ा है। क्योंकि यदि श्री कृष्ण द्यूत सभा में आ जाते, तो यह जादूगरी नहीं दिखाते, अपितु अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल की तरह दुःशासन, दुर्योधन आदि धूर्तों की गर्दन उड़ा देते। पाण्डवों के वन चले जाने का समाचार सुनकर श्रीकृष्ण उनसे मिलने वन में गये, तो रोती हुई द्रौपदी को सांत्वना देते हुए उन्होंने कहा था कि बहन! तू जिन पर क्रुद्ध है, उन (कौरवों) की स्त्रियाँ इसी प्रकार रोवेंगी। मैं पाण्डवों की जो भी सहायता कर सकता हूँ, अवश्य करूँगा। तू दुःखी मत हो।' और फिर युधिष्ठिर से बोले-

नैतत् कृच्छ्रमनुप्राप्तो भवान् स्याद्वसुधाधिप।
यद्यहं द्वारकायां स्यां राजन् संनिहितः पुरा।। (वन. 13/1)

आगच्छेयमहं द्यूतमनाहूतोऽपि कौरवैः।
वारयेयमहं द्यूतं बहून् दोषान् प्रदर्शयन्।।2
न चेत् स मम राजेन्द्र! गृह्णीयाद् मधुर वचः।
पथ्यञ्च भरतश्रेष्ठ निगृहणीयां बलेन तम्।। 12
सोऽहमेत्य कुरूश्रेष्ठ द्वारकां पाण्डुनन्दन।
अश्रौषं त्वां व्यसनिनं युयुधनाद् यथातथम्।। 15
श्रुत्वैवचाहं राजेन्द्र परमोद्विग्नमानसः।
तूर्णमभ्यागतोऽस्मि त्वां द्रष्टुकामो विशाम्पते।।16

'हे राजन्! यदि मैं तब द्वारका में या आसपास होता, तो आप इस कष्ट को प्राप्त नहीं होते। मैं कौरवों के न बुलान पर भी वहाँ पर आता और जूए के दोष दिखाकर उन्हें रोकता। हे राजेन्द्र! मेरे इस प्रेम के प्रस्ताव को यदि वह (दुर्योधन) नहीं मानता, तो मैं उसे बलपूर्वक पकड़ लेता। पाण्डु नन्दन! द्वारका में (सौभ नगर की लड़ाई जीतकर) आकर सात्यकि से तुम्हारे विषय में सुनकर अत्यन्त उद्विग्न मन वाला मैं तुमसे मिलने के लिए बहुत शीघ्रता से आया हूँ।" यहाँ श्रीकृष्ण के शब्दों से यह स्पष्ट हो रहा है कि वे उस घटना (चीर हरण) से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। तो सीधी सी बात है कि वस्त्र बढ़ाने वाली घटना काल्पनिक है, क्योंकि श्रीकृष्ण झूठ नहीं बोलते थे। क्या महाभारत को इतिहास मानने वाले लोग इस सत्य को स्वीकार करने की उदारता दिखाएंगे?

आज के अंग्रेजी पढ़े लोग रामायण को इसलिए काल्पनिक मानते हैं कि उसमें वानरों (बन्दरों) ने मानव की तरह मानव से युद्ध किया। पर वे ही पढ़े लिखे डार्विन के विकासवादी सिद्धान्त पर अक्षरशः विश्वास करके बड़ी शान से कहते हैं कि आदि मानव (उनके पूर्वज) का पूर्व बन्दर या चिम्पेंजी था। अर्थात् हम मानव बन्दरों की औलाद हैं। वहाँ तर्क क्यों नहीं चलता कि यदि बन्दर से मानव बना, तो यह प्रक्रिया अब क्यों बन्द हो गई? अर्थात् हम मानव बन्दरों की औलाद हैं। वहाँ तर्क क्यों नहीं चलता कि यदि बन्दर से मानव बना, तो यह प्रक्रिया अब क्यों बन्द हो गई? अर्थात् अब भी बन्दर से मानव बनने के बीच की भिन्न भिन्न अवस्थाएँ होनी चाहिएँ- किसी बन्दर की पूँछ 2 फुट की, किसी 1 फुट की, किसी की 4 इंच की होनी चाहिएं थी। बन्दर तो आज भी शाकाहारी है, फिर उसका वंशज आदि मानव मांसाहारी कैसे हो गया? मानवता के दया, क्षमा, त्यगा, उदारता आदि गुण बन्दर में आज भी नहीं है, फिर उसके वंशज (मानव) में कहाँ से आये?

जलवायु आदि के कारण संसार के मानवों की शक्ल भिन्न भिन्न प्रकार की है, जबकि उसके पूर्वजों (बन्दरों) की शक्ल लगभग समान क्यों है? बन्दर और मानव की शारीरिक बनावट में कुछ समानता होने से दोनों को एक जाति नहीं माना जा सकता। क्योंकि खच्चर और घोड़े में बहुत अधिक समानता होने पर भी दोनों अलग-अलग जाति हैं।

इतिहास और साईंस में डार्विन के जिस विकासवादी सिद्धान्त का ढोल पीटा जा रहा है, उस पर पूरा विश्वास तो डार्विन को भी नहीं था। तत्कालीन व बाद के भी

बहुत से वैज्ञानिक इसे नकार चुके हैं, पर भारत में बुद्धि के ठेकेदारों ने ऐसा षड्यन्त्र रचा है कि सात-आठ साल के बच्चों के दिमाग में यह बात अच्छी तरह बिठा दी जाती है, कि बन्दर स्वयं ही अपना विकास करके मानव बना है। इसे बनाने के लिए किसी ईश्वर की आवश्यकता नहीं है। आस्तिक लोगों! ज़रा सोचिये क्यो ईश्वर में मानव आदि जीव पैदा करने का सामर्थ्य नहीं है? क्या कर्म-फल व्यवस्था के लिए ईश्वर की आवश्यकता नहीं है? क्या कर्म फल व्यवस्थानुसार विभिन्न योनियों में आना-जाना नहीं होता? क्या केवल शरीर ही विकास (बन्दर से आदमी बनने का) करता है या आत्मा की भी भूमिका होती है? क्या आत्मा अपनी इच्छा से ही किसी भी योनि में जा सकता है?

दूसरी ओर, रामारण के आदर्श पात्रों (हनुमान, सुग्रीव आदि) को बन्दर कहने वाले और टेलीविजन पर उन्हें बन्दर के रूप में दिखाने वाले भी धूर्त हैं। क्योंकि वे उनकी पत्नियों (तारा, रुमा आदि) को बन्दरियाँ नहीं, औरत (मानव की स्त्रियाँ) दिखाते हैं। अपने इतिहास पर गर्व करने वालो, ऐसा भिन्न-भिन्न जाति का सम्बन्ध बनाते (दिखाते) हुए तुम्हें तनिक भी लज्जा नहीं आती? किष्किन्धा की राज्य-व्यवस्था, सुग्रीव-अंगद आदि का आभूषण धारण करना आदि कूदने वाला बन्दर मानने वालों की बुद्धि पर तरस आता है। ज़रा सोचिये, क्या कोई बन्दर किसी मानव के साथ बात कर सकता है? बिना एक-दूसरे की भाषा जाने तो दूर देश के मानव भी मानव के साथ बात नहीं कर सकते। फिर बन्दर कैसे करेगा? जबकि रामायण में हनुमान ने राम-लक्ष्मण का परिचय लेते समय शुद्ध संस्कृत में बात की थी। उनकी शुद्ध भाषा को सुनकर राम इतने प्रसन्न हुए थे कि लक्ष्मण यह कहे बिना नहीं रह सके-

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।

नासामवेद विदुषः शक्यमेवं विभाषितुम्।। (किष्किन्धा)

नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।

बहु व्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम्।। (3-28, 29)

"जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया तथा जो सामवेद का विद्वान् नहीं है, वह इस प्रकार भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होंने सम्पूर्ण व्याकरण का कई बार स्वाध्याय किया है, क्योंकि बहुत सी बातें बोलने पर भी इनके मुंह से कोई अशुद्धि नहीं निकली।"

यह भी स्मरण रहे कि बिना सिखाए तो मानव भी अस्त्र-शस्त्र नहीं चला सकते, फिर बन्दर कैसे चलाएँगे? वाल्मीकि-रामायण के अनुसार राम जैसे महाबली योद्धा ने क्या बन्दरों की शरण ली थी? क्या बन्दर अग्निहोत्र करते हैं, क्या बन्दरों को आर्य कहा जाता है? क्या बन्दरों का राजतिलक होता है, क्या बन्दरों में भी पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म की मर्यादा होती है? जबकि सुग्रीव, हनुमान आदि के ये सब क्रिया कलाप थे, जो उन्हें मानव सिद्ध करते हैं। उन्हें पूँछ वाला पशु (बन्दर) बताना धूर्त प्रक्षेपकों की नीचता है।

जब हनुमान ने नन्दीग्राम जाकर भरत को राम-आगमन का समाचार सुनाया, तो उसे सुनकर भरत अत्यधिक प्रसन्न हुए और दौड़कर हनुमान को गले लगाते हुए बोाले-

देवो वा मानुषो वा त्वमनुक्रोशादिहागतः।

प्रियाख्यानस्य ते सौम्य ददामि ब्रुवतः प्रियम्।। (युद्ध. 125/43)

"भैया! तुम कोई देवता हो या मनुष्य, जो मुझ पर कृपा करके यहाँ पधारे हो? सौम्य! तुमने जो यह प्रिय संवाद सुनाया है, इसके बदले मैं तुम्हें कौन सी प्रिय वस्तु प्रदान करूँ?"

आँखों के अन्धों को इससे अधिक और क्या दिखाएँ? यह ठीक है कि हनुमान आदि के लिए रामायण में प्लवग, वानर कपि आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसका कारण उन्हें पशु बनाने वाले प्रक्षेपक की धूर्तता भी हो सकता है और इन शब्दों का संकुचित अर्थ लेना भी। इन महाविद्वान्, बलवान योद्धाओं के लिए वानर

शब्द का प्रयोग ठीक ऐसा ही है, जैसे किसी व्यक्ति का नाम हाथी (गजराम, गजेन्द्र, गजसिंह), शेर (शेरसिंह, समशेर) आदि होता है। ऐसे रूढ़ नाम वाले लोग आज भी गाँवों में प्रायः मिल जाते हैं। जैसे-

मैंने एक बार विद्यालय के पास बाजे की आवाज सुनकर विद्यार्थियों से पूछा- गाँव में आज किसकी शादी है, बच्चों ने कहा- शेर की। मैंने पूछा- क्या शेर की शादी में भी बाजे बजते हैं? तो बच्चे हँसते हुए बोले- नहीं जी, वह तो आदमी है, शेर तो उसका नाम है।'

पर इतिहास के हत्यारे भक्त तो हनुमान को बन्दर ही मानते हैं और उसके पराक्रम (हनुमान चालीसा, सुन्दर काण्ड आदि) को मात्र कुछ भौतिक पदार्थों की प्राप्ति कराने वाला साधन या भूत-प्रेत, रोग, दुःख आदि से बचाने वाला तंत्र। समझ नहीं आता इसे भक्ति कहूँ या अज्ञान की मदिरा।

पता नहीं किस शरारती मस्तिष्क से उपजी एक कहानी महाभारत में जुड़ गई, जिसे न ऐतिहासिक कह सकते हैं, न शिक्षाप्रद और न ही मनोरंजक। फिर भी इतिहास की धारा को ऐसा मोड़ दे गई कि व्यास पीठ पर विराजमान कथावाचक से लेकर भारत का बच्चा-बच्चा कहता फिरता है कि द्रौपदी के पाँच पति थे। इस कथा का तन्तु इतना कोमल है कि एक मामूली से झटके में टूटकर गिर सकता है पर हम प्रयास ही नहीं करते। वैदिक विद्वानों ने इस भ्रान्ति का निवारण करने के लिए बहुत ही स्तुत्य प्रयास किया है, पर सैकड़ों वर्ष से मन में जमी धारणा मस्तिष्क के दरवाजे बन्द किये बैठी है, ताकि सत्य की कोई किरण भी अन्दर प्रवेश ना कर सके। दयानन्द सन्देश, मई 2010 में इस विषय पर लिखा जा चुका है। फिर भी प्रबुद्ध पाठकों की सेवा में कुछ विचार बिन्दु सविनय प्रस्तुत हैं-

1. महाभारत में बहुत से प्रमाण हैं, जो युधिष्ठिर को ही द्रौपदी का पति सिद्ध करते हैं यद्यपि स्वयंवर अर्जुन ने जीता था, पर बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटा भाई विवाह नहीं कर सकता था। स्वयंवर दूसरों के लिए भी जीते जाते थे। युधिष्ठिर के राजा बनने से द्रौपदी महारानी बनेगी, अतः राजा द्रुपद को कोई आपत्ति नहीं थी।

2. माँ कुन्ती अपने पुत्रों के समय पर घर (जहाँ वे शरण लिये हुए थे) न पहुँचने के कारण चिन्तित थी। अतः उनकी आवाज सुनकर मुँह फेरे नहीं बैठ सकती थी और उसे पता था कि आज उसके बेटे भिक्षा माँगने नहीं गये हैं। द्रौपदी माँगी हुई भिक्षा नहीं थीं अपितु बाहुबल से जीती गई थी। भिक्षा तो माँ कुन्ती भी खाती थी, फिर यह क्यों कहा कि पाँचों बाँटकर खा लो? 'विशेष भिक्षा' लाने की बात प्रक्षेपक ने कर्ण आदि राजाओं को पराजित कर बाद में पहुँचे अर्जुन के मुख से कहलवाई है, जबकि आदिपर्व के 187वें अध्याय का 26वाँ श्लोक बताता है कि अर्जुन द्वारा लक्ष्य बींधते ही युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव तत्काल अपने आवास पर पहुँच गये थे। तो क्या उन्होंने माता कुन्ती को यह शुभ समाचार नहीं दिया होगा?

3. क्या स्वयंवर जीतते ही अज्ञात कुल वाले ब्राह्मण के साथ किसी राजा की बेटी बिना विवाह संस्कार किये भेज दी जाती है?

4. महाभारत आदिपर्व, अध्याय 197, श्लोक 11-12 के अनुसार द्रौपदी का पाणिग्रहण युधिष्ठिर द्वारा किया जाना लिखा है। कन्यादान बार-बार नहीं किया जाता।

5. सभापर्व अध्याय 67, श्लोक 29 के अनुसार द्रौपदी को 'नरेन्द्रपत्नी' कहा है, जो उसे युधिष्ठिर की पत्नी सिद्ध करता है। क्योंकि राजा युधिष्ठिर ही था।

सभा पर्व में ही द्रौपदी ने स्वयं को युधिष्ठिर की पत्नी बताया है। उसी समय दुर्योधन के शब्द भी यही दर्शा रहे हैं-

तामिमां धर्मराजस्य भार्यां सदृशवर्णजाम्।

ब्रूत दासीमदासीं वा तत् करिष्यामि कौरवाः।। (सभा. 69-11)

द्यूत सभा में द्रौपदी ने पूछा- "कौरवों! मैं धर्मराज युधिष्ठिर की धर्मपत्नी तथा उनके समान वर्ण की कन्या

हूँ। आप लोग बतावें, मैं दासी हूँ या अदासी? आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूँगी।"

तिष्ठत्वयं प्रश्न उदासत्वे, भीमेऽर्जुने सहदेवे तथैव।
पत्यौ च ते नकुले याज्ञसेनि, वदन्त्वेते वचनं त्वत्प्रसूतम्।। (70-3)

दुर्योधन बोला- द्रौपदी! तुम्हारा यह प्रश्न महाबली भीम, अर्जुन, सहदेव, तुम्हारे पति (युधिष्ठिर) और नकुल पर छोड़ दिया जाता है। ये ही तुम्हारी पूछी हुई बात का उत्तर दें।" यहाँ पति एकवचन है।

विराट पर्व के 18वें अध्याय के प्रथम श्लोक में द्रौपदी ने भीम को कहा- "हे वीर! जिस स्त्री का पति युधिष्ठि हो, उसे शोक न हो, यह कैसे सम्भव है?"

अशोच्यत्वं कुतस्तस्या, यस्या भर्ता युधिष्ठिरः।

कीचक को मारते समय भीम ने कहा था- "भाई की पत्नी का अपहरण करने वाले (भ्रातुर्भार्यापहारिणम्) सैरन्ध्री (द्रौपदी) के लिए काँटे रूप कीचक को मारकर आज मैं उऋण हो जाऊँगा और मुझे अत्यधिक शान्ति प्राप्त होगी।" (विराट 22-79)

6. पाण्डवों के जुए में हारने के बाद धृतराष्ट्र ने द्रौपदी को कुछ माँगने के लिए कहा तो द्रौपदी ने सबसे पहले केवल युधिष्ठिर का दासभाव से छूटना मांगा था, ताकि उस (द्रौपदी) का पुत्र प्रतिविन्ध्य दास पुत्र न कहलाए। यदि वह पाँचों की पत्नी होती तो अकेले युधिष्ठिर की मुक्ति से यह सम्भव न था। द्रौपदी को दाँव पर लगाने से पूर्व युधिष्ठिर ने इसके लिए किसी से नहीं पूछा था। इससे भी द्रौपदी युधिष्ठिर की ही पत्नी सिद्ध होती है। महाभारत में द्रौपदी ने भीम आदि चारों भाइयों को नाम लेकर पुकारा है, पर युधिष्ठिर का नाम नहीं लिया। पति का नाम न लेना आर्यों की प्राचीन परम्परा है।

ये सब युक्तियाँ और प्रमाण तो युधिष्ठिर को ही द्रौपदी का पति सिद्ध कर रहे हैं, पर धूर्त पण्डित माता कुन्ती से 'बाँटकर खा लो' कहलवाकर ही सन्तुष्ट नहीं हुए, क्योंकि एक झूठ को सत्य सिद्ध करने के लिए झूठ पर झूठ बोलनी पड़ती हैं। अतः कुम्हार के घर में, जहाँ पाण्डव रहते थे, विवाह से पूर्व अर्जुन के साथ आई (यह असम्भव है) द्रौपदी को देखकर पाँचों पाण्डवों में काम भाव जगा दिया।

स्वयंवर में जाने से पूर्व ही वेदव्यास द्वारा पाँचों पांडवों को द्रौपदी का पति घोषित करवा दिया और उस अधर्म को प्रमाण्टिा करने के लिए द्रौपदी के पूर्वजन्म की कथा घड़कर वेदव्यास की ही मोहर लगवा दी। वेद व्यास जी बोले- पाण्डवो! एक ऋषि कन्या को रूप-गुण सम्पन्न होने पर भी कोई पति नहीं मिला, तो उसने कठोर तप किया। शंकर भगवान ने प्रसन्न होकर उसे वर माँगने को कहा, तो कन्या ने कई बार यह कहा कि मुझे सर्वगुण युक्त पति चाहिए। शंकर ने कहा- तुझे पांच भरतवंशी पति प्राप्त होंगे। कन्या बोली- 'मैं तो एक ही पति चाहती हूँ।' शंकर बोले- तूने पति प्राप्ति के लिए पाँच बार प्रार्थना की है। मेरी बात अन्यथा नहीं हो सकती। दूसरे जन्म में तुझे पाँच ही पति प्राप्त होंगे।

ये हैं पौराणिकों के सर्वान्तर्यामी भगवान, जो एक कन्या की भावना को भी नहीं समझ पाए और उसे वेद व समाज के विरुद्ध एक की जगह पाँच पति दे दिये, वे भी अगले जन्म में। उसी में क्यों नहीं? बेचारी को पति पाने के लिए एक जन्म और कन्या का लेना पड़ा। यदि सब कुछ पूर्व निश्चित था, तो अर्जुन का पराक्रम कहाँ रहा? माता कुन्ती से कहलवाने की क्या आवश्यकता थी? वेद व्यास की मोहर ही काफी थी।

ऐसे भोले भण्डारियों के वरदान और शाप ने धरती के इतिहास को आकाश में उड़ा दिया। ऐसी ऐसी तुकबन्दी करने वाले ही इस देश में महापण्डित कहला गये। यदि ऐसी बेतुकी कहानियों के कारण कुछ इतिहासकार आर्यों के प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थों की उपेक्षा करते हैं, तो आप सोचिये, दोषी कौन है- इन्हें काल्पनिक कहने वाले या काल्पनिक बनाने वाले?

(क्रमशः)

❑❑

कुछ लड़प कुछ झड़प

(राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, अबोहर)

ऋषि के जीवन चरित्र, ऋषि के पत्र व्यवहार तथा ऋषि के गहन अध्ययन से यह पता चलता है कि ऋषि का सर्वस्व, ऋषि के मुख्योद्देश्य तथा परमधर्म वेद-प्रचार था। हरिद्वार के कुम्भ मेला पर जब शास्त्रार्थ के बहाने ऋषि को मरवाने का षड्यन्त्र रचा गया तब ऋषिवर ने अपने रक्त पिपासु विरोधियों को लिखा था कि मुझे अपने शरीरपात की तो चिन्ता नहीं परन्तु वह उपकार का कर्म रह जायेगा जिसके लिये मैं लगा हूँ।

अब आर्यसमाज के लोग वेद को मिशन मानकर सोच विचार कर न तो लिखते हैं और न बोलते हैं हर कोई किसी संवेदनशील, राजनैतिक रंग की चर्चा करके बोलना व लिखना चाहता है। कारण ब्रह्मचर्य, यम, नियम व तप संयम को विषय बनाने से News वाला (समाचार पत्र) महत्व नहीं बनता। बलात्कार की रट लगाने से किसी पत्र में समाचार छप सकता है। शुचिता पर कुछ कहने से समाचार नहीं बनता कालाधन व स्विट्ज़रलैण्ड का शोर मचाने से ताली पिट सकती है। पहले आर्यसमाज के पत्र Views Magazine (विचार पत्र) होते थे अब लगभग सब News Magazine समाचार पत्र बन चुके हैं। अपवाद अवश्य हैं। अब इन बिन्दुओं पर विचारिये।

गौरव गिरी पं. लेखराम जी :- पुराने आर्यमसाजी पं. लेखराम जी को शहीदे अकनार (वीर शिरोमणि, हुतात्माओं का मुकट मणि) मानते थे। पण्डित जी के लिए एक मुसलमान विद्वान् ने एक विशेषण का प्रयोग किया है- "कोहे वकार" (गौरव गिरी या गरिमा का पर्वत)। मेरे साथ शरर जी भी इस खोज में लगे कि क्या किसी मुस्लिम विद्वान् या नेता के लिए भी कभी मुसलमानों ने इस विशेषण का प्रयोग किया है? शरर जी तो हार गये। उन्हें कहीं ऐसा प्रमाण न मिला। मुझे एक प्रमाण अवश्य मिल गया।

पं. शान्तिप्रकाश जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी, श्री शरर जी ने तो 'कोहे वकार' विशेषण की खोज पर सेवक को बहुत बहुत बधाई दी परन्तु गत 25 वर्षों में मैंने तो किसी विद्वान् वक्ता, भजनोपदेशक के मुख से यह शब्द और यह प्रसंग ही नहीं सुना। कारण लेखराम जी की चर्चा की न्यूज वैल्यू अखबारी कीमत नहीं है। यदि यह विशेषण रानी झांसी, वीर कन्हाईलाल, ला. हरदयाल के साथ जुड़ा होता तो फिर सब छोटे बड़े वैदिक प्रवक्ता साधु इस शब्द को बोल-बोल कर घिसा देते।

बिस्मिल जी की आत्म कथा :- बिस्मिल जी की आत्म कथा भले ही सब समाजी वक्ताओं ने न पढ़ी हो परन्तु इसकी तोता रटन सुनता ही रहता हूँ। महान् बिस्मिल की इस पठनीय कृति में कुछ भूलें अथवा भ्रामक तथ्य भी हैं। उनकी ओर ध्यान दिलाने पर भी सब साधु, गवेषक, महात्मा तथा पुरस्कृत इतिहास लेखक चूक का सुधार करने को तैयार नहीं। हिण्डौल से छपी एक पुस्तक के खोजी लेखक ने तो स्वामी सोमदेव जी का निधन बिस्मिल के बलिदान के बाद और जीवन में भी बताया है। क्या उनकी मृत्यु दो बार हुई थी? मैंने यह खोज करके प्रमाण सहित लिखा कि बिस्मिल जी के गुरु स्वामी सोमदेव लाहौर में नहीं वज़ीराबाद में जन्मे थे। गोरे लेखकों को गौरव से उद्धृत करने वाले एक लेखक ने मेरे लेखों का लाभ तो उठाया परन्तु मेरी पुस्तक का या मेरा नाम देना उचित नहीं जाना। कोई बात नहीं भारतीय नारियाँ कभी पति का नाम नहीं

लिया करती थीं इसी प्रकार कोई मेरा नाम लेने से सकुचाता है तो इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं। भूल का कुछ तो सुधार हो। आत्म कथा में और भी कुछ बातें ठीक नहीं परन्तु मिशन ही जब सामने नहीं केवल ताली बजवाने की भूख सताती हो तो सत्य अप्रतिष्ठित ही होगा। संगठन शोभा रहित होता जायेगा।

स्वामीजी महाराज का पत्र व्यवहार :- स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, पं. चमूपति जी, महाशय मामराज जी, पं. भगवद्दत्त जी, श्रद्धेय मीमांसक जी ने ऋषि के पत्रों की खोज व सुरक्षा के लिए जो साधना की- उसका लेखा जोखा करना अति कठिन कार्य है। ऋषि की उपलब्धियों व विचारों को जानने के लिए ऋषि के पत्र का गम्भीर अध्ययन अत्यावश्यक है। परोपकारिणी सभा कुछ वर्षों से इन पत्रों का एक नया संस्करण निकालने का कठिन कार्य करने में लगी है। यह एक ऐसा कार्य है जिसको हर कोई नहीं कर सकता। इसके लिए सबसे उपयुक्त विद्वान्, विचारक ओर गवेषक आचार्य विरजानन्द जी ही हैं। वह लम्बे समय से इस कार्य को सिरे चढ़ाने में लगे हैं।

इन पंक्तियों का लेखक भी गत 45-50 से पत्र व्यवहार में घुसा रहता है। दो तीन वर्ष पूर्व ऋषि भक्ति से प्रेरित होकर अति व्यस्त होने पर भी लेखक ने सभा को कहा था, "छपने से पहले मुझे ग्रन्थ दिखा देना।" गत कुछ वर्षों से ऋषि जीवन के कार्य में खोया रहा। पत्र-व्यवहार में बार-बार डुबकी लगाई। मेरा कार्य विद्वानों के सामने आया। अब अजमेर में श्री धर्मवीर जी और श्री विरजानन्द जी इस विषय पर विचार विमर्श कर रहे थे। मैं भी साथ था तब डा. धर्मवीर जी ने श्री विरजानन्द जी को कहा; एक बार जिज्ञासु जी को भी पढ़वाकर प्रेस में पत्रव्यवहार देना।"

प्यारे ऋषि के लिए इस आयु में जी जान से इस महत्वपूर्ण परियोजना को सिरे चढ़ाने के लिए दिनरात एक कर दूंगा। ऋषि जी के पत्रों का सम्पादन बहुत तकनीकी कार्य है। ऋषि के पत्रों की खोज व प्रकाशन के आन्दोलन के जन्मदाता पं. लेखराम जी थे। श्री महाशय कृष्ण जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, ऋषि भक्त सरदार रुपसिंह जी जैसे कई आर्य पुरुषों ने पं. भगवद्दत्त जी आदि को सहयोग करके इन आन्दोलन को आगे बढ़ाया। श्री धर्मवीर जी विरजानन्द जी ने भी पत्रों की खोज व अध्ययन में प्रशंसनीय श्रम किया है। सेवक ने भ पत्र व्यवहार पर कार्य करते हुए इतिहास के नये सूत्र खोज निकाले हैं। ऋषि के मिशन के प्रत्येक सेवक को इस कार्य में सभा को और विरजानन्द जी को भरपूर सहयोग देना चाहिये। ऋषि जीवन पर कार्य करते समय ऐतिहासिक महत्त्व की नई-नई सामग्री लेखक के सामने आई जिसकी ओर पहले हम लोगों का ध्यान गया ही नहीं यथा भुज कच्छ (गुजरात) राज्य विषय ऋषि का पत्र। इस पत्र से पता चलता है कि इस युग में देश को दीन, दलित, दरिद्र व मूक प्रजा के सबसे पहले व सबसे बड़े हितचिन्तक सुधारक, विचारक राष्ट्रीय नेता ऋषि दयानन्द थे। ऐसे ऐसे बिन्दुओं को आर्य विद्वान् क्यों नहीं उठाते?

बिना सोचे समझे अपना मत न थोपा करें :- कई बार पर्याप्त विचार किये बिना किसी घटना के सब पक्षों को जाने बिना हम अपने एकांगी विचार का निर्णायक मानकर उसकी जोर शोर से धोषण कर देते हैं ऐसे फ़तवे इतिहास शास्त्र को लहूलुहान कर देते हैं यथा अभी इन दिनों एक ने यह लेख देकर अपनी रिसर्च का ढोल पीट दिया कि हैदराबाद सत्याग्रह से पूर्व वहां निजाम ने सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगा दिया। प्रतिबन्धित पुस्तकों की सूची पं. नरेन्द्र जी ने, इस सेवक ने, ला. गोविन्दराम जी ने अपने साहित्य में दी है। सार्वदेशिक सभा के पुराने साहित्य में भी है। उपर्युक्त कथन Cheap Opinion (सस्ती राय) मात्र है। कुशलदेव जी ने ऋषि जीवन की खोज के लिए बहुत कुछ किया। आपने पादरी नीलकण्ठ शास्त्री का चित्र मुझसे मांगा,

मैं उन्हें ना नहीं कह सकता था परन्तु ग्रन्थ में फोटो देने के पक्ष में नहीं था। अब कई नौसिखिये अति उत्साही पादरी जी को विषय बनाकर चल पड़े।

देशवासियों को सिखों को यह बताने का आन्दोलन न छेड़ा गया कि इसी पादरी ने महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र अन्तिम सिख शासक दलालसिंह को ईसाई बनाया था। सिख भी यह घाव भूल गये। ऋषि ने और आर्यसमाज ने उसे धूल चटा दी। लक्ष्मणजी के ऋषि जीवन में सनातनधर्मी विद्वान् नेता पं. गंगाप्रसाद दिल्ली के प्रमाण से हमने यह टिप्पणी दी है कि प्रयाग, काशी आदि तीर्थों के बड़े-बड़े पण्डित इसका अपने नगरों में सामना न कर सके। ऋषि दयानन्द को देखकर यह पादरी वहाँ से भाग खड़ा हुआ। ऋषि ने इसकी बोलती बन्द कर दी। आर्यो! क्या तुमने यह बिन्दु कहीं उठाया? सेवक को इस बात का गौरव है कि मैंने सन् 1952 में दिल्ली में इन पण्डित जी के दर्शन किये और इन्हें दीवानहाल में सुना तथा उन पर तब भी लिखा। यह देखकर आश्चर्य होता है कि गोरे लेखकों, नेहरू जी की Discovery of India तथा सर सैयद अहमद की माला फेरने वाले वक्ताओं ने पं. गंगा प्रसाद शास्त्री जी की पुस्तक के तथ्यों को प्रचारित नहीं किया। यह हीन भावना नहीं तो क्या है?

देश भाषा का बिन्दु :- पं. लेखराम रचित ऋषि जीवन में तथा श्री लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में राजकोट (गुजरात) की घटनाओं का वर्णन करते हुए श्री शंकरलाल के मुख से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह लिखा गया है। राजकोट के धर्मशाला चौक में ऋषि जी ने 'देश भाषा' में व्याख्यान दिया। इसका बड़ा प्रभाव पड़ा। यहाँ देश भाषा शब्द से क्या समझा जावे। हमने श्री दयालमुनि जी, श्री भावेश मेरजा, श्री वैद्यराज महेश जी, आदि कई गुजराती विद्वानों तथा डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी तथा डॉ. धर्मवीर जी से इस विषय में चर्चा की और कहा कि इसका अर्थ गुजराती भाषा समझना चाहिये। सब विद्वानों को हमारा विचार जँच गया। ग्रन्थ की अन्तःसाक्षी भी दे दी। यदि इसका अभिप्राय हिन्दी होता तो सर्वत्र इसका प्रयोग होना चाहिये था। श्री भवानीलाल भारतीय ने 'देशभाषा' पर टिप्पणी दी है कि इससे हिन्दी भाषा अभिप्रेत हैं।

स्वामी सत्यानन्द जी ने भी राजकोट में गुजराती भाषा में बोलने, संवाद का संकेत दिया है। राधास्वामी गुरु श्री हजूर जी महाराज ने भी ऋषि जीवन में लिखा है कि मुम्बई में गुजराती भाषा में प्रचार करने का स्वामजी को बड़ा लाभ मिला। राधास्वामी गुरु समकालीन थे और जाने माने लेखक थे। उनके कथन की उपेक्षा नहीं की जा सकती। टिप्पणी चढ़ाने से पहले बहुत विचार करना चाहिये। खेद है कि इस बिन्दु को हम गुजरात में नहीं उठा सके। विद्वानों ने इस देन का मूल्य समझा।

भूल तो बनी रही :- ऋषि जीवन में ऋषि के दो पौराणिक विरोधियों की चर्चा मिलती है। एक थे गोपाल शास्त्री जम्मू वाले और एक थे पं. श्री गोपाल मेरठ वाले। मेरठ वाले पं. श्रीगोपाल तो काशी शास्त्रार्थ से भी पहले मूर्तिपूजा पर टक्कर लेने निकले और घोर विरोधी थे परन्तु दोनों ही बदल गये। दोनों ऋषि के प्रशंसक बने। लक्ष्मण जी के ग्रन्थ पर इन दोनों पर नये नये प्रमाण देकर तत्कालीन पत्रों के उद्धरण देकर बहुत ठोस तथ्य जुटाने में हम सफल हुए। जम्मू वाले गोपाल शास्त्री जी का वक्तव्य जो उर्दू मासिक 'विद्याप्रकाशक; में छपा था उसे खेजते-खोजते वर्षों निकल गये। ग्रन्थ का अनुवाद सम्पादन करते समय उसकी एक जिल्द हाथ लग गई।

जब उसे उद्धृत करके टिप्पणी देने का समय आया तो यह ध्यान न रहा कि पहले दिन क्या लिखा था? कहाँ समाप्त किया था? एक पुराने लेखक की एक उर्दू पुस्तक के उसी प्रसंग पर दृष्टि पड़ गई। उसने गोपाल शास्त्री जी के नाम के साथ आदरसूचक 'श्री' शब्द लगा

रखा था। नाम की सादृश्य के कारण लेखक ने इन्हें मेरठ वाले 'श्रीगोपाल' शास्त्री समझ लिया। पहले दिन के लिखे को देखे बिना इसे 'श्रीगोपाल' मेरठ वालों से जोड़ना भारी भूल प्रूफ़ पढ़ते समय भी किसी की पकड़ में न आई। हिण्डौन से छपे श्री हरबिलास के ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद में अपनी इस भूल का संकेत किया तो वहाँ एक और भूल जोड़ दी गई। हमने 'श्रीगोपाल' लिखा तो कम्प्यूटरकार व प्रूफ़रीडर ने श्री को आदर सूचक समझकर श्रीगोपाल जी का श्री गोपाल शास्त्री जम्मू वाले बना डाला। यह मुद्रण कला के विचित्र चमत्कार होते हैं। एक भूल को सुधारते सुधारते दूसरे भूल गले पड़ गई। इसी को कहते हैं :-

"दादी मर गई, पोती जामी- रहे तीन के तीन"

यह प्रसंग छेड़ने का प्रयोजन यही है कुछ भी लिखते समय विशेष रूप से ऋषि जीवन पर कार्य करने वालों को बहुत सजग होकर कार्य करना चाहिये हिण्डौन से प्रभाकर जी ने उक्त ग्रन्थ छपवाकर करणीय कार्य तो कर दिया परन्तु टाईप बहुत छोटा रखा। ऋषि के जीवन पर कार्य करने वाले तथा किसी भी ऋषि भक्त का एक चित्र भी नहीं दिया। पच्चीस दानियों के चित्र अवश्य हैं। जीवन देने, लहू देने का हम मूल्य ही नहीं समझते। कोई क्या सीखेगा?

ऋषि की टांग तोड़ने की शरारत :- ऋषि पर कब कब कहाँ कहाँ वार प्रहार किये गये? हमने इसे Highlight (उजागर) किया है। ऋषि जीवन काल में ही लाला साईंदास जी ने उनकी टांग तोड़ने की दुर्घटना का उल्लेख किया है। टांग ठीक तो हो गई परन्तु यह शरारत कहाँ की गई? यह लालाजी ने नहीं लिखा। आश्चर्य का विषय है कि नये पुराने वक्ताओं व लेखकों ने इस घटना की सुरक्षा के लिए प्रचार नहीं किया। यह ज्ञात तथ्य सप्रमाण हमने छपवा दिया। अज्ञात जीवन की कल्पित कहानियाँ दिल्ली जैसे महानगर में परोसी व बेची जाती हैं। इतिहास की सुरक्षा हो और इतिहास प्रदूषण रोका जाये।

पं. लेखराम कृत ग्रन्थ का अनुवाद :- श्री लाला दीपचन्द जी की ऋषि भक्ति पर बलिहारी जो प्राणवीर पं. लेखराम जी के ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद छप गया। अनुवादक श्री रघुनन्दन जी योग्य आर्य थे। सिद्धान्त प्रेमी थे। हमने भी लाला दीपचन्द जी के जीवन काल में इसे क्रय किया। इसके प्रसार में सहयोगी भी रहे परन्तु अनुवाद की जाँच परख नहीं की। उस समय श्री शरर जी, अमर स्वामी जी, पं. शान्ति प्रकाश जी जैसे अनेक दक्ष अनुभवी विद्वान् यह कार्य कर सकते थे। न जाने हम सबको इसकी जाँच परख का ध्यान क्यों न आया। यह कई बार छप चुका है। भारतीय जी ने भी इसका सम्पादन कर दिया है। ऋषि जीवन पर कार्य करते हुए यह चौंकाने वाला तथ्य सामने आया कि अनुवादक जी का फारसी भाषा का अच्छा ज्ञान नहीं था। इस कारण अनुवाद में कई दोष हैं उन दोषों की कहानी लम्बी है।

इसी हिन्दी अनुवाद को लेकर ऋषि के शास्त्रार्थ संग्रह छपते रहे। परोपकारिणी सभा ने भी रामलाल कपूर ट्रस्ट के शास्त्रार्थ संग्रह का एक बढ़िया संस्करण छपवा दिया और खपा दिया। नये संस्करण की तैयारी हो गई तब सभा को हमने कहा कि एक ही शास्त्रार्थ में बीस से अधिक अशुद्धियाँ। ईसाइयों की एक पुस्तक का नाम ही अशुद्ध छपा है। पं. लेखराम जी ने तो अशुद्ध नहीं लिखा था। शास्त्रार्थों के सम्पादक तो कई बन गये परन्तु तो यह हुई कि पं. शान्ति प्रकाश जी, ठाकुर अमरसिंह जी या शरर जी से यह कार्य न करवाया गया। जालन्धर शास्त्रार्थ के मौलवी जी का नाम ही बहुतों ने अशुद्ध छापा है। मक्खी पर मक्खी मारने जैसी बात है। लक्ष्मण जी के ग्रन्थ पर कार्य करते हुए हमने यथा सम्भव तत्कालीन पत्रों में प्रकाशित ऋषि के शास्त्रार्थ खोजकर मिलान करे फिर उन्हें छापा है। इसका आर्यजन

ने कितना लाभ उठाया है, यह भी पता चल जायेगा।

जो हुआ सो इतिहास है : इतिहास वैसा नहीं हो सकता जैसा कि हम लिखना चाहते हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, महाशय कृष्ण जी, पूज्य उपाध्याय जी, पं. इन्द्र जी, पं. भगवद्दत्त जी जैसे नेताओं व विद्वानों के चले जाने के पश्चात् आर्यसमाज में इतिहास प्रदूषित करने वाले लेखकों व घुसपैठियों की मौज बन आई। बिना सोचे विचारे इतिहास गढ़ने वालों की एक फसल तैयार हो गई। **'आर्य समाज में इतिहास प्रदूषण'** पुस्तक के प्रकाश की प्रतीक्षा कीजिये। आर्यसमाजी इसे पढ़कर चौंक जावेंगे।

सर प्रताप सिंह का और ऋषि का कल्पित संवाद गढ़ लिया गया। नन्ही भगतन वेश्या को उसके चरित्र की पावनता का प्रमाण पत्र दिया गया। दिल्ली से डॉ. विवेक जी ने एक पुरानी पुस्तक देखकर अति उत्साह से झट निर्णय दे दिया कि श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ऋषि विरोधियों की आर्य सन्मार्ग संदर्शिनी सभा में सम्मिलित हुए थे। बाबू देवेन्द्रनाथ बंगाल से थे। यह सभा कोलकाता में ही हुई थी। देवेन्द्र बाबू तथा पं. लेखरामजी, मेहता राधाकिशन आदि के ग्रन्थ देखे बिना अपना निर्णय दे देना अपनी इच्छा के अनुसार गढ़ना है। ऐसी सोच से मिलेगा क्या? तभी इस नई रिसर्च का किसी की प्रेरणा से न चाहते हुए भी प्रतिवाद करना पड़ा। जब यह सभा आयोजित की गई- उस समय के पत्र में प्रकाशित समाचार छपवाने पर बाधित होना पड़ा। ऋषि के जीवन काल में छपा वह अंक प्रभु कृपा से हमारे पास निकल आया। न होता तो इस नई रिसर्च के सामने पं. लेखराम, श्री देवेन्द्र बाबू आदि जीवन लेखक क्या टिक पाते? यह कहना कठिन है। दुर्गा प्रसाद जी बहुत अच्छे विद्वान नेता थे। उनकी भूल को भूल मानना चाहिये था। उसे हथियार बनाकर कल्पित इतिहास गढ़ना उचित नहीं।

ऋषि जीवन का निरन्तर चिन्तन-निरन्तर सेवा :- श्री पं. भगवद्दत्त जी ने लिखा है कि ऋषि के प्रत्येक दूसरे तीसरे पत्र में देशहित, देश सेवा तथा देश के गौरव व उन्नति की चर्चा है। नई पीढ़ी के सुयोग्य युवकों को नये सिरे से ऋषि जीवन पर निरन्तर चिन्तन करके कुछ ठोस सामग्री देकर नवीन चेतना का संचार तथा निरन्तर समाज सेवा करनी चाहिये। विरोधियों के वार होने पर चुप्पी साधने वालों से सावधान रहो। खोज के नाम पर ऋषि जीवन को उपहास का विषय न बनने दो। आप सरकारी अर्थार्थी खोजी ने लिखा कि ऋषि को लाला मूलराज जैसे कर्मठ सहयोगी मिले। यह गप्प पढ़कर सारा आर्य समाज मौन रहा। फिर विनाश व पतन क्यों न हो। मूलराज ने धर्म रक्षा व धर्म प्रचार के लिए कोई कष्ट सहा? ज्वालामुखी आदि तीर्थों की यात्रा अवश्य की और मांसाहार का प्रचार व सरकार सेवा की।

श्री ज्ञानसिंह जी ने ऋषि के जीवनकाल में पंजाब में शुद्धि आन्दोलन की धूम मचा दी। सैकड़ों हिन्दू व सिख जो धर्मच्युत हो गये थे- इस आर्यवीर ने बचाये। मूलराज, रमा बाई के गीत गाने वालों ने कभी ज्ञानसिंह का पुण्य स्मरण किया? पादरी कुक ने भारत को ईसाई बनाने के लिये जोशीले व प्रभावशाली भाषण दिये। अंग्रेजी पंडित उस पर मुग्ध थे। ऋषि ने उसे ललकारा। ऋषि की हुँकार सुनकर वह सात समुद्र पार भाग खड़ा हुआ। देश ने पहली बार एक गोरे पादरी को एक वैदिक ऋषि के सामने भागते देखा। यह इतिहास का नया मोड़ था। पादरियों की सूचियाँ बनाने वाले यह घटना कभी सुनाई? कहीं लिखीं? राधा स्वामी गुरु हजूर जी महाराज तथा सनातन धर्मी नेता पं. गंगाप्रसाद जी शास्त्री को धन्यवाद देना चाहिये जिन्होंने इतिहास की इस करवट का नोटिस लिया। हमने गहन चिन्तन करके सब घटनाओं का मूल्याङ्कन किया है। आप भी करिये।

❑❑

"मैया तेरी कोख सुहागिन"

विश्व के सबसे बड़े जनतन्त्र का ऐतिहासिक निर्वाचन सम्पन्न हो गया। परिणाम आने पर देशवासी गद्‌गद्‌ हो गये। श्रेय लेने वालों में भी प्रतिस्पर्धा होने लगी है। परिणाम आने पर हमारे अधरों पर आचार्य चमूपति जी की एक कविता की यह पंक्ति उतर आई :- "मैया तेरी कोख सुहागिन"

यह पंक्ति गुरु विरजानन्द जी महाराज की कुटिया पर लिखी गई। इस कुटिया से ऋषि दयानन्द का जन्म हुआ था। हम इस पंक्ति देश की वयोवृद्ध माता हीराबाई पर चरितार्थ करते हैं जिस की कोख से ऊहावान्‌, साहसी, गुणसम्पन्न और कर्मण्यता की मूर्ति मोदी का जन्म हुआ है। किसने ऐसी कल्पना की थी कि मोदी को ऐसी प्रचण्ड विजय प्राप्त होगी। परिणाम आने तक कोई भी मोदी की लहर मानने को तैयार नहीं था। केवल एक नरेन्द्र मोदी और फिर अमित शाह तीन सौ व इससे भी ऊपर सीटों की बात कहते रहे। विरोधी व्यंग्य कसते रहे और उपहास उड़ाते रहे।

यह भ्रम कोई व्यक्ति व संस्था न पाले कि यह विजय किसी की कृपा का फल है। यह विजय मोदी की और देश की जनता की विजय है। इसमें श्री अमितशाह का तो अविस्मरणीय सहयोग है। संघ या विश्व हिन्दू परिषद्‌ या किसी अन्य को इस विजय का श्रेय देना इतिहास का मुँह चिढ़ाने जैसी बात है।

देश के राजनेताओं का अपनी वाणी व भाषा पर संयम नहीं रहा। इनकी भाषा असंयत व आपत्तिजनक है। देश के एक विख्यात पत्रकार व स्वतन्त्रता सेनानी ने राम जन्म भूमि आन्दोलन में भाजपा को चेतावनी दी थी कि भाजपा साधुओं को इतना आगे न लाये। साधु पूजे जाते हैं। यह किसी गृहस्थी के अनुशासन में नहीं रह सकते। अपवाद तो होता है। इतिहास ने उस पत्रकार के कथन की पुष्टि कर दी।

हम देशहित में श्री मोदी की प्रचण्ड विजय का स्वागत करते हैं। भगवान्‌ से हमारी यही कामना है कि वंशवाद, भ्रष्टाचार, लूट खसूट का नाश हो। पुनः पुनः माता हीराबाई का अभिनन्दन करते हुए मोदी युग का स्वागत करते हैं।

सन्‌ 1869 में गुजरात में जन्म ऋषि दयानन्द का काशी आगमन नवयुग की पग आहट थी। अब 145 वर्ष पश्चात्‌ गुजरात के राजनेता का काशी आगमन नवयुग की उसी पग आहट का स्मरण करवाता है। मोदी का आगमन नवयुग का उदय सिद्ध होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

❑❑

(पृष्ठ 3 का शेष)

यज्ञ सदा करना चाहिये।

जैसे-जल अपने रस से औषधियों को बढ़ाता है और वे उत्तम रस के योग से रोगनाशक होकर सुखदाकय होती हैं, और जैसे-ईश्वर कारण से कार्य की यथावत्‌ रचना करता है, सूर्य सब जगत्‌ को प्रकाशित करके निरन्तर रस का भेदन कर पृथिवी आदि का आकर्षण करता है, और-वायु धारण करके पुष्ट करता है, वैसे ही हमें भी यथावत्‌ शुद्ध किये परस्पर मिश्रित द्रव्यों से विद्वानों का संग विद्या की उन्नति, होम और शिल्प नामक यज्ञों से वायु और वर्षाजल की शुद्धि सदा करनी चाहिए।।1/21।।

विचारों के साथ व्यवहार की आवश्यकता

किन्हीं महत्वपूर्ण विषयों पर उपयोगी व सटीक विचार प्रस्तुत व प्रकाशित कर देना बड़ा पुण्य कार्य है, लेकिन उससे भी कहीं अधिक पुण्यप्रद या उनका सार्थक लाभ देने वाला है उनका सनिष्ठ क्रियान्वयन। विचारों का वाणी व लेखनी से प्रकट होना या करना एक प्रकार से तदनुकूल व्यवहार करने का आह्वान ही तो है। आज हर मनुष्य जानता है कि वह जो कुछ कर रहा है वह किसी दृष्टि से उचित नहीं, पुनरपि कुसंस्कारों व दुर्वासनाओं को पाषित व प्रोत्साहित करने वाले वर्तमान वातावरण में प्रथम तो मनुष्य इष्ट-अनिष्ट में अन्तर करने में ही सफल नहीं हो पाता, जो इस अन्तर को देख व जान रहे हैं वे भी महर्षि व्यास के शब्दों में दुर्योधन की तरह यह कहने को विवश है- 'जानामि अहं धर्मं ना च मे प्रवृत्ति, जानामि अहमधर्मं न च मे निवृत्ति। केनापि देवेन हृदस्थितेन यथा नियुक्तोस्मि तथा करोमि"!!

यही अवस्था आज मनुष्य मन से आगे बढ़कर समाज व संस्थाओं में भी देखी जा सकती है। प्रसन्नता की बात है कि आज इस दुरावरण को तोड़की ललक विगत कुछ काल से देखने को मिली है। मैं समझता हूँ ऐसे संक्रान्ति काल में हर एक निष्ठावान, संवेदनशील आर्य महानुभाव को स्व सामर्थ्यानुसार इसमें सहयोग व सहानुभूति की आहुति अवश्य ही देनी चाहिए। यद्यपि यह कार्य सरल नहीं, मगर असम्भव भी तो नहीं। मैं नहीं मानता कि हमारे पास इस परिवर्तन के लिए वाञ्छित शक्ति व सामर्थ्य की कोई कमी है, यदि कोई कमी है तो वह है सज्जनों के संगठन की। सत्कर्म सज्जनों के संगठित सत्प्रयासों से सदैव ही सफल होते हैं।

क- आध्यात्मिक व सामाजिक गतिविधियों के व्यवहारिक प्रयास :-

एक सीधी सी बात है कि जिसके पास कोई वस्तु ही हो नहीं वह उसे दूसरों के लिए कैसे व कहाँ से दे सकेगा? हमें मानव के इस सहज स्वभाव को समझना होगा कि वह वाणी की अपेक्षा व्यवहार पर अधिक भरोसा करता है। इनमें अन्तर होने पर वह किसी के बारे में जब धारणा बनाएगा तो उसका आधार व्यवहार होगा न कि वाणी। किसी भी विद्या का विनिमय सदाचरण सम्बन्धी मापदण्डों से नाप तौलकर ही होता है, इस धर्म व्यापार में जबानी जमा खर्च नहीं चलता। एक लम्बे काल से संसार इस क्षेत्र में धोखा करता व भोगता आ रहा है, इसलिए जनमानस आज इन धर्माधिकारियों के व्यवहारिक पक्ष को कुछ अधिक ही सूक्ष्मता व गहराई से किंवा सन्देह की दृष्टि से देखने लगा है। होना तो ये चाहिए था कि जनता इनके व्यक्तित्व में जो टटोलना चाहती थी उसे ये साधना, तप त्याग आदि से विकसित करते। ऐसा न करके इन्होंने अपने आसपास एक ऐसा घेरा बना लिया जिसे भेदकर कोई-श्रद्धालु हृदय ही जा सकता है तार्किक बुद्धि नहीं। परिणामतः धर्म भेड़ों की का विषय बनकर रह गया।

आर्य समाज की आध्यात्मिकता श्रद्धोपेत हृदय व विश्लेषणात्मक बुद्धि के समुचित सामञ्जस्य से ही समझी जा सकती है। हमें अध्यात्म के लिए ऐसे व्यक्तित्व चाहिए जो एक श्रद्धालु को तर्क का औचित्य तथा एक तार्किक को श्रद्धा की उपयोगिता भली भाँति समझा सके। यह काम अधिक निपुणता व प्रभावी ढंग से वही कर सकता है जिसके जीवन में ये दोनों तत्व हों। हमें बहुत गहराई से सोचना चाहिए कि विज्ञान जितनी उन्नति कर रहा है धर्म उतना ही पिछड़ रहा है, अव्यावहारिक होता जा रहा है क्यों? वैज्ञानिक उपलब्धियों से उत्साहित

व उत्तेजित मानव धार्मिक सिद्धान्तों के प्रति अविश्वासी क्यों होता जा रहा है? महर्षि कणाद की दृष्टि में अभ्युदय भौतिक विकास और निःश्रेयस अर्थात् आत्म उन्नति की सिद्धि करने वाली जीवन पद्धति ही धार्मिक कहलाती है। हमारे लिये अत्यन्त योग्य है कि हम संसार को यह विश्वास दिलाएं कि जो सर्वोच्च सत्ता (परमेश्वर) इन सृष्टि नियमों की संचालक व नियामक है वही कर्मफल सम्बन्धी सिद्धान्तों की संचालक व नियामक है। विज्ञान के सिद्धान्त जितने अटल व अपरिवर्तनीय हैं, कर्मफल सिद्धान्त भी उतने ही हैं। विज्ञान के जानने न जानने से जीवन उतना प्रभावित नहीं होता जितना कि कर्मफल सिद्धान्त से होता है आज विज्ञान केवल शारीरिक सुख सुविधाओं तक ही सीमित है जबकि धर्म देह-आत्मा दोनों का ध्यान रखता है। इस दिशा में इस प्रकार का बहुत ही प्रभावोत्पादक चिन्तन दिया जा सकता है। अस्तु।।

इसके लिये क्या करें?- मैं पहले ही विश्वास व्यक्त कर चुका हूँ कि हमारे पास ऐसे श्रेष्ठ सदाचारियों की कमी नहीं है, आवश्यकता उन्हें सही स्वरूप में परखने व प्रतिष्ठित करने की है। कहते हैं कि हीरा की परख जौहरी ही करता है। मेरे विचार में आर्य समाज के प्रधान व मन्त्री आदि का चयन करने से पूर्व सदाचार सम्बन्धी योग्यता को अनिवार्य ही कर देना चाहिए। नियम बना दें कि जो आर्य सभासद् नित्य संध्या स्वाध्याय व यज्ञ नहीं करता हो तथा इन तीनों का प्रभाव जिसके जीवन व कार्यों में परिलक्षित न होता हो वह प्रधान व मन्त्री का चुनाव लड़ ही नहीं सकता। यह चरित्र सम्बन्धी बाध्यता जब तक न होगी तब तक आर्य समाज के कायाकल्प की सब योजनाएं, सारे प्रयास, औपचारिकता या दिखावा मात्र होंगे। एक विद्वान सदाचारी, त्यागी तपस्वी उपदेशक व प्रचारक के महत्व को समझना, उसकी भावना का सम्मान करना उसे उसी के अनुरूप व्यवहार देना लोकैषणा के पुतलों, व सुविधा-भोगियों द्वारा कदापि सम्भव नहीं। जब तक हमारे प्रचारकों, उपदेशकों, विद्वानों को यथोचित सम्मान संरक्षण न मिलेगा, तब तक वह या तो समाज से कट कर एकाकी जीवन जियेगा, या सुधांशु जी की तरह अपना अलग ही गोरख धन्धा चलाएगा या चाटुकारिता के सहारे प्रचार व उपदेश के नाम पर लच्छेदार भाषण, चटपटे चुटकुले सुनाकर परिवार पालने के लिए अपने स्वरूप को ही खो बैठेगा। वर्तमान हमें यही शिक्षा दे रहा है। जब नेतृत्व ही दिशाहीन होगा तो सुकृत व सुफल की कल्पना कैसी? आज हमारे चुनाव किस प्रकार सम्पन्न होते हैं, उनमें नैतिकता व पद की गरिमा योग्यता का क्या स्थान होता है यह सब जानते हें। एक सरल हृदय, शालीन, शिष्ट, सदाचारी वेदवित् सज्जन ऐसे वातावरण में प्रधान वा मन्त्री होने के सपने देख सकता है? या उक्त प्रकार की मानसिकता वाले महानुभाव से सज्जनों के प्रति सद् व्यवहार की आशा की जा सकतीै ? आओ इस अवस्था व व्यवस्था को बदलने के लिए गम्भीरता से सच्चे हृदय से कुछ सार्थक कदम उठाएँ, पीड़ित मानवता बड़े आर्त स्वर में हमें पुकार रही है- 'उल देवा अनहितं देवा अन्नयथा पुनः।

उतागः चक्रुषं देवा देवा जीव यथा पुनः।। (ऋ. 10.136.1)- हे वेदज्ञ आर्यो! गिरे हुओं को उठाओ! जिसने पाप कर्म करके जीवन को मलिन कर लिया है, उस व्यक्ति व समाज को पुनः पवित्र जीवन दो।। ध्यान रखो आर्यो से काम हम ही कर सकते हैं, क्योंकि इस प्रक्रिया को हम ही जानते हैं, तो उठ खड़े हो जाओ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते' (ऋ.1.401) हे वेदरक्षको उठो। "मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः" (ऋ. 1.27.13) अपने पूर्ववर्ती विद्वानों धर्मात्माओं ऋषि मुनियों की अक्षय कीर्ति का नाश मत होने दो।।

❑❑

एक समकालीन इतिहासकार वर्णित

ऋषि दयानन्द की जीवन संध्या

(डॉ. भवानीलाल भारतीय)

महाकवि सूरदास ने अपनी रचना साहित्य लहरी में स्वयं को महाराजा पृथ्वीराज चौहान के राजकवि चन्द्रबरदाई का वंशज बताया है। ध्यान रहे कि चन्द्र भट्ट या भाट जाति के थे जो अब गुजरात में ब्रह्मभट्ट कहलाते हैं। इन्हीं के वंश में 19वीं शताब्दी में एक विद्वान् पं. नेनूराम ब्रह्मभट्ट थे जो ऋषि दयानन्द की जीवन संध्या के समय जोधपुर में रहते थे।

वर्षों बाद प्रसिद्ध मासिक चांद ने 1929 में अपना चर्चित मारवाड़ी अंक निकाला तो उसमें प्रो. रमाकान्त त्रिपाठी (कानपुर) का उक्त पं. नेनूराम पर एक लेख छपा। यही प्रो. त्रिपाठी कालान्तर में जसवन्त कालेज जोधपुर में अंग्रेजी के प्रवक्ता रहे। इन पंक्तियों के लेखक ने उनसे अंग्रेजी साहित्य का बी.ए. में अध्धयन किया था। प्रो. त्रिपाठी को जो जानकारी ऋषि की जीवन संध्या के बारे में मिली, वह चांद के उक्त विशेषांक के पृष्ठ 150 पर इस प्रकार है। यह कहना आवश्यक है कि नेनूराम उन तीन व्यक्तियों में थे जो अजमेर से स्वामी जी को जोधपुर लाने के लिए गये। उनके साथ कवि अमरदात तथा सेठ दामोदारदास सांधी भी थे। इसके सिवा जितने दिन स्वामी जोधपुर रहे उतने दिन नेनूराम जी निरन्तर उनकी सेवा में रहे। स्वामीजी के बल पौरुष, उनकी निर्भीकता, उनकी वाग्मिता का सजीव चित्र भट्ट नेनूराम ने मुझे बताया उनकी आंखों देखी बात है कि प्रातःकाल उठकर तीन चार मील तक ऋषि दयानन्द तेज चाल से बाहर जंगल में निकल जाते। वहीं व्यायाम करके वापस आते और कम से कम दो तीन सेर दूध पीते। भोजन करते समय इसी परिमाण में हरे शाक खाते थे।

उनकी साधारण बोलचाल की ध्वनि ऐसी गम्भीर और उच्च होती कि दूर से सुनाई देती। जब कभी सभा में वक्तृता देते तो लोग मंत्र मुग्ध से हो जाते। उनकी शैली ऐसी चुभने वाली होती थी कि जब चाहते श्रोताओं की आंखों को आंसुओं से भर दे और कभी उन्हें हंसा देते। भट्ट जी का कहना था कि एक बार किसी व्याख्यान में स्वामी जी कुरान शरीफ से कुछ आयतें बोलीं तो उनका उच्चारण इतना शुद्ध था कि कई मुसलमान लोग श्रोता चिल्ला उठे - यह साक्षात् खुदा का अवतार है। उनके निवास काल में कई आततताई लोगों ने उनके साथ कुत्सित व्यवहार किया और उनकी जीवन लीला का अन्त इतना शीघ्र कराया कि उसके सम्बन्ध भी कुछ दोहराना अनुचित है। केवल इतना कहना काफी है कि इन दुष्टों में एक का नाम कालिया था जिसने एक दूसरे व्यक्ति से मिलकर प्रसिद्ध वेश्या नन्हीं जान से स्वामीजी को दूध में विष मिला दिया।

नेनूराम उस समय का पूरा वृतान्त देते हैं जब स्वामीजी को आभास होने लगा था कि उन्हें विष दिया गया है। वे स्वामीजी के साथ साथ आबू होते हुए अजमेर गये थे। जब तक कि विषपान से अस्वस्थ हुए वे जोधपुर से विदा हुए थे।

उपसंहार में हम कह सकते हैं कि नेनूराम जी जिन्होंने इनकी ऐतिहासिक सामग्री इतने परिश्रम से

एकत्र कर हमारे सामने प्रस्तुत की है, जिन्होंने स्वामी दयानन्द जैसे महापुरुष का सत्संग किया है वे स्वयं इतिहास बन गये हैं।

- चांद मारवाड़ी अंक 1929
पृ. 150-151

कुछ स्पष्टीकरण - यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि स्वामीजी को विष देने वाले का वास्तविक नाम धूड़ जी मिश्र था और वह रसोइए के तौर पर स्वामीजी के साथ शाहपुरा से आया था। स्वामीजी को मरवाने के षड्यंत्र में नन्हीं के अतिरिक्त मियां फैहजुला का हाथ भी बताया गया है। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि महाराजा जसवन्तसिंह के पास नन्हीं नाम की दो स्त्रियां रखैल के रूप में थी। पहली मुसलमान थी - नन्हीं जान। किन्तु स्वामीजी को विष दिलाने में जिस नन्हीं का हाथ था वह हिन्दू भगतन जाति की थी। सामान्य रूप से इस जाति में वेश्यावृति का प्रचलन है किन्तु महाराजा की प्रेयसी नन्हीं को वेश्या न कह कर उपपत्नी, रखैल या पासवान (मारवाड़ी शब्द) कहना उचित है। वह वैष्णव मत को मानती थी। और उसका बनाया विष्णु मंदिर जोधपुर उदय मंदिर मोहल्ले में मुख्य मार्ग पर है। यह अब राजकीय सम्पत्ति है।

3/5, शंकर कालोनी, श्री गंगानगर

जीवन की ढलती शाम

(भीमाशंकर सारडे, आलंद)

ओउम् इदमुच्छ्रेयो अ वसान मागा शिवे मेद्यावा पृथिवी अर्भूताम्।
असपत्नाः प्रदिशो भवन्तु न वैत्वा द्विष्मो

अभयं नो अस्तु।। अथर्व वेद कांड 19 सुक्त 14 मंत्र 1 - अब तो जीवन के संध्याकाल में मेरे लिये यही श्रेयस्कर है कि मैं संसारी संघर्षों से अलग हो जाऊँ। पृथ्वी और अंतरिक्ष की देवशक्तियाँ मेरा कल्याण करें। सब दिशाएँ मेरे लिए द्वेषमुक्त हो जायें और मेरा मन भी द्वेष रहित रहे, भयमुक्त रहे।

जीवन की है ढली शाम, हे प्रभु अब दो यह वरदान।। टे।।
संसारी संघर्ष न आये, राग द्वेष अब नही सताये,
धरती के या आसमान के, सभी देवता दया दिखाये,
वैर-विरोध मिटे सब के मन, मिले अभय अक्षय वरदान।। 1।।

सभी स्नेह से भरे हृदयहो, सभी सुखद हो और सदय हो,
रहे नहीं मनमें अभिमान, केवल भाव रहे कल्याण।। 2।।

देश शक्तिशाली होकर भी कमजोर क्यों है?

प्रकृति ने भारतवर्ष पर अन्य देशों की तुलना में दिल खोलकर प्राकृतिक सम्पदा लुटाई है। उपजाऊ जमीन, जंगल ऋतुओं की समतोल, तीनों ओर से समुद्र खनिज पदार्थ, नदी, पहाड़ इत्यादि हृदय खोल कर इस देश को प्रदान किया है। सांस्कृतिक विचारधारा, वेदों का आदि ज्ञान तथा मानव कल्याण की परम्परा से सदियों यहाँ पुष्पित और पल्लवित हो रही है। सही अर्थ देखा जाय तो हमारा देश प्राकृतिक, भौतिक और सांस्कृतिक संपत्तियों का भण्डार रहा है और आज भी है।

सामाजिक क्षेत्र में ही देश किसी से कम नहीं रहा है। यहाँ के राजा महाराजाओं ने अपने शौर्य और पराक्रम से देश पर हुए मध्यपूर्व के आक्रमणों से रक्षा की है। हाँ इतना जरुर है कि सावतीं शताब्दी में हुए मुस्लिम धूर्त आक्रान्तताओं से इस देश को 700 वर्षों तक गुलामी सहन करनी पड़ी। इसमें मध्य पूर्व काल में आयी जड़ता कारणीभूत हो सकती है। कुल मिलाकर हमारे योद्धाओं ने अपने शौर्य और पराक्रम से उत्तर पश्चिम की सीमाओं को विदेशी आक्रान्ताओं से बचाये रखा। उस काल में भी सामाजिक साधनों से हमारा देश परिपूर्ण था और आज भी है। आज हमारे राष्ट्ररक्षा के साधन विपुल और सक्षम हैं। विभिन्न अस्त्रों से केवल अणुबम्ब जैसे शत्रु राष्ट्र संहारक हथियार हमारे हाथ में हैं। आज हम एशियाखण्ड में चीन के पश्चात् सभी देशों में अण्वस्त्रधारी और बलशाली हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी हम कमजोर हैं यह हमारा मत न होकर पड़ौसी देशों का और यहाँ की जनता का मत है।

यह कमजोरी इस देश की नहीं, यहाँ की जनता की नहीं, यह कमजोरी नेताओं द्वारा बनायी गयी मानसिक और कृत्रिम है। जैसे कोई दुर्बल व्यक्ति अपने हाथों में अत्याधुनिक शस्त्र ले कर भी उसको चला नहीं सकता, जिसकी मानसिकता सशक्त नहीं है, वह निडर होकर शत्रु पर आक्रमण नहीं कर सकता कुछ इसी तरह की मानसिकता वाले नेता हमारे देश को कमजोर बनाये हुए हैं। क्या हमारे रक्षामंत्री, विदेश मंत्री और प्रधानमंत्री ने अपनी देहबोली, अपने व्यक्तित्व और वक्तव्य से शत्रु राष्ट्र को कभी सोचने के लिए मजबूर किया है। क्या उनकी वाणी में वह तेज है जिसे सुनकर शत्रुओं के पसीने छूट गये हों? ऐसा कभी नहीं हुआ है। राजनीति में नेताओं के हावभाव और व्यवहार बहुत महत्वपूर्ण होता है जो सामने के व्यक्ति पर अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव डालता है। आधी समस्याएँ तो नेताओं की वाणी से सुलझ जाती हैं। जैसे देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल के वक्तव्य और व्यवहार से सुलझ गयी थी। 565 रियासतों का एक संघ भारत में शामिल करना कोई आसान काम नहीं था जो उन्होंने बड़ी दृढ़ता के साथ किया। सिर्फ एक कश्मीर का मामला पं. जवाहरलाल नेहरु को सौंपा गया था जिसका परिणाम आप जानते ही हैं। तो मैं कह रहा था इसी तरह देश की बागडोर कमजोर हाथों में चली जाय तो देश कितना ही शक्तिशाली हो वह कमजोरी का प्रतीक बनकर रह जाता है। कमजोर सैनिक और कमजोर नेता शत्रुओं पर आक्रमण नहीं कर सकते। शत्रु को उसी की भाषा में जवाब देना होता है जो सेना और सरकार ही दे सकती है। इसलिए देश की बागडौर मजबूत हाथों में हो तो ही देश सुरक्षित ओर शक्तिशाली रह सकता है शत्रु को उसकी भाषा में जवाब देने के लिए मजबूत मानसिकता

की जरूरत होती है जो आज कुर्सी में बैठे हुए नेताओं में नहीं है। इच्छा शक्ति का अभाव तो हमारे नेताओं में आजादी के बाद से ही रहा है। सन् 1947 में पाकिस्तान ने कबीलों को कश्मीर पर आक्रमण करने के लिए भेजा था। हमारे पहले प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु के भीरु वृत्ति के कारण हम सम्पूर्ण कश्मीर वापस नहीं ले सके। उस समय के राजा हरिसिंह ने कश्मीर रियासत को बचाने की गुहार भारत सरकार से लगाई थी लेकिन अपने इमेज की खातिर तथा दुनिया क्या सोचेगी इस अप्रस्तुत भय के कारण पं. जवाहरलाल नेहरु ने दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ पाकिस्तान पर आक्रमण नहीं किया और कश्मीर के प्रश्न को यूनो में ले जाकर भारत के लिए सिरदर्द बनाकर रख दिया। पं. नेहरु की इस ढुलमुल नीति ने पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच चिरशत्रुत्व का निर्माण हो गया।

युद्ध और अहिंसा के विषय में महात्मा गांधीजी ने कहा था- जो स्वयं का वध होते हुए भी अपने हत्यारे के प्रति क्रोध नहीं और ईश्वर से क्षमा करने को कहता है वही सचमुच अहिंसक है। तथा अन्य एक स्थान पर उन्होंने कहा था कि ... "मनुष्य अपने भाई के हाथों (शायद पाकिस्तान) जरुरत पड़ने पर मरने को तैयार रहकर आजादी से जीता है। उसे मारकर नहीं।" यहाँ गांधीजी का अभिप्रेत है कि, व्यक्ति शत्रु के हाथों मरकर भी आजाद हो जाता है याने जिन्दगी से छुटकारा पा जाता है। क्या यह विचार राष्ट्ररक्षा और विदेश नीति के लिए आत्मघाती नहीं है? इस तरह की अकल्पनीय और अनाकलनीय बातें क्या राष्ट्र अथवा समाज को मजबूती दे सकती हैं। और यहीं शत्रु भय आज के नेताओं के खून में रच बस गया है। ऐसे वक्तव्यों से वह व्यक्ति स्वयं तो महान बन जाता है लेकिन राष्ट्र को कमजोर बना देता है। अनेक नेताओं में यही विचार और संस्कार परम्परा से चले आ रहे हैं। अतः वे बाह्य शत्रुओं और आंतरिक आतंकवादियों के सामने कठोर निर्णय नहीं ले पाते। इसके विपरीत जो राष्ट्रभक्त हैं इस देश की संस्कृति और परम्परा में विश्वास रखते हैं, उनमें इनके प्रति बिल्कुल सहानुभूति नहीं है। इसे ही "स्वजन उपेक्षा" और "शत्रुप्रियता" कहा जाता है।

जब सरबजीत सिंह पाकिस्तान की जेल में यातनाएँ भुगत रहा था तब यूपीए सरकार उसकी ओर गंभीरता से नहीं देख रही थी। सरबजीत का परिवार भारत सरकार से आक्रोश कर कह रहा था कि सरबजीत निर्दोष है उसे किसी तरह बचालो। सत्ताधारियों ने परिवार की बात को गंभीरता से नहीं लिया और जब उसे जेल में बड़ी नृशंसता से मारा गया तब उसे शहीद का दर्जा देने और झूठी सहानुभूति दिखाने की होड़ लगी रही। यह बात सरकार के समझ में आनी चाहिये थी कि कसाब और अफजल गुरु को फांसी दिये जाने के बाद भारतीय कैदियों के साथ धोखा हो सकता है लेकिन उस तरह की दूरदृष्टि हो तभी ना। यह भारतीय नागरिकों के प्रति उदासीनता और गैरों के प्रति तत्परता का भाव नहीं तो क्या है। इस फांसी काण्ड के बाद सम्बन्धित मन्त्रालयों द्वारा पाकिस्तान के शासकों को चेतावनी देना जरुरी था कि हमारे नागरिकों के साथ कोई ज्यादती न हो और कुछ कम ज्यादा होगा तो इसकी जिम्मेदारी पाकिस्तान की होगी। पर ऐसा कुछ नहीं किया गया और जो होना था वह सरबजीत के साथ हुआ। यह बेफिक्री मिजाज किसी शक्तिशाली देश का लक्षण नहीं हो सकता। अगर यही घटना किसी चीनी नागरिक के साथ हमारे यहाँ हो जाती तो चीन अपने नागरिक के लिए क्या न करता। इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इटली के दो हत्यारों को यह सरकार वापिस नहीं ला सकी, उनको वापिस लाने में न्यायालय की भूमिका अहम रही है। यहाँ पर भी नेताओं की निर्णय क्षमता और निडरता नहीं दिखाई दी।

हमारे देश के नेता देश बचाने से अहम अपनी सत्ता बचाने को महत्व देते हैं इसलिए देश की सुरक्षा और नागरिकों के हितों को दुय्यम दर्जा दिया जा रहा है। पहले से ही खून में आ रही पराकाष्ठा की अहिंसा और उस पर दूरदृष्टि का अभाव राष्ट्र को दुर्बल बनाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। सत्ता के लिए पैसा और पैसे के लिए भ्रष्टाचार यह दुष्टचक्र हमारे नेताओं के जीवन में घुल मिल गया है। अनैतिक आचरण से आत्मबल नष्ट हो जाता है। आत्मबल के लिए नेताओं में निस्वार्थ भावना होनी चाहिए। इसी निस्वार्थ भावना से कठोर निर्णय लेने की शक्ति आती है। यह आत्मबल किसी बाजार में नहीं मिलता। मं. गांधीजी के नैतिक आचरण को इन नेताओं नें नहीं लिया, लिया सिर्फ अहिंसा की अतिवादिता को। मैं पहले भी कह चुका हूं कि गांधीजी की अहिंसक वृत्ति वैयक्तिक और आध्यात्मिक जीवन के निर्माण के लिए तो उपयोगी है लेकिन राष्ट्र के लिए घातक है। जो व्यक्ति राष्ट्रहित की बजाय स्वार्थहित साधता है वह स्वयं तो नष्ट होता है और देश को भी नष्ट कर देता है।

आज का भ्रष्टाचार देश को दीमक की तरह खाये जा रहा है। देश का आर्थिक शोषण इसी भ्रष्टतन्त्र के कारण हो रहा है। जनता के खून पसीने की गाढ़ी कमाई को नेता घूस लेकर सफा चट कर रहे हैं। 2-जी घोटाला, कोयला घोटाला, कलमाडी द्वारा किया गया खेल घोटाला और अभी हाल में पवन कुमार बंसल द्वारा किया गया सबसे बड़ा रेल घोटाला ये देश को रसातल तक पहुंचाने में और आर्थिक दृष्टि से नष्ट भ्रष्ट करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। भ्रष्टाचार और उसके द्वारा सत्ता हथियाना नेताओं के हथकण्डे बन चुके हैं। भ्रष्टाचार से नैतिकता और आत्मिक बल नष्ट हो जाता है और ऐसे नेता जब सत्ता के सिंहासन पर बैठते हैं तो देश कमजोर हो जाता है। वे कठोर निर्णय लेने में अकार्यक्षम होते हैं। आजादी की लड़ाई लड़ने वाले नेताओं मे जो कार्यक्षमता दिखाई देती थी वह आज के नेताओं में इसलिए नहीं है कि उनका नैतिक बल गिर चुका है वे सत्ता सुख के इतने आदी हो चुके हैं कि उन्हें संघर्ष करना तो दूर राष्ट्रहित में निर्णय लेने की क्षमता तक नहीं रही। 15 अगस्त और 26 जनवरी को भारतवर्ष का तिरंगा लहराया जाता है। लाल किले पर प्रधानमंत्री देश के आगामी संकल्प को दोहराते हैं। वहाँ पर भी सामयिक समस्याओं की ही चर्चा की जाती है। होना तो यह चाहिए कि आने वाले समय में देशहित में क्या करने जा रहे हैं, दृढ़ संकल्प को दोहराया जाना चाहिए। हमारे पड़ोसियों के सम्बंधों पर नीति निर्धारण होना चाहिए। लेकिन वैसा कुछ सुनने को नहीं मिलता। 26 जनवरी को विदेशी मेहमान के सामने शस्त्रास्त्रों का प्रदर्शन करने की एक परम्परा बन चुकी हम अपने हथियारों का प्रदर्शन करने में स्वयं को धन्य मानते हैं लेकिन सीमा पर उसके प्रयोग से डरते हैं। मानो यह कह रहे हों, "ऐ! पड़ोसी देश के रहनुमाओं देख लो हमारे पास कैसे कैसे खतरनाक हथियार हैं देख लो।" हम दिखावा करते हैं कभी सीमा पर जाकर मजबूती से क्रियात्मक अभ्यास नहीं करते। ये नेता ये सोचते हैं कि हमारे पास इतने घातक हथियार हैं तो फिर कैसे शत्रु हम पर आक्रमण कर सकता है। लेकिन शत्रु बहुत चालाक है वह आपके प्रदर्शन से नहीं डरता क्योंकि हथियार प्रयोग करने की हिम्मत आप में नहीं है वह यह बखूबी जानता है। जैसे कंजूस आदमी जेब में पैसे रखकर भी वह खर्च नहीं करता उसी तरह हथियारों से लैस मुल्क उन अस्त्रशस्त्रों का प्रयोग नहीं कर सकता क्योंकि उनमें वह आत्मिक बल अथवा कठोर निर्णय लेने की क्षमता नहीं है।

आज इज्राइल का ही उदाहरण ले लीजिए एक टापू जैसा देश चारों ओर से अरब राष्ट्रों से घिरा हमास जैसे

आतंकवादियों से जिसको खतरा लगातार रहता है जहाँ उपजाऊ जमीन का नितान्त अभाव है, जहाँ कृषि विकास के उतने साधन नहीं है, फिर भी अपनी इच्छा शक्ति और कठोर निर्णयों के कारण शत्रु राष्ट्रों के बीच अडिग होकर खड़ा है यदि उसके एक नागरिक की हत्या होती है तो उसके बदले शत्रुराष्ट्र के दस नागरिकों को मौत के घाट उतारा जाता है ओर इसी कठोर नीति के कारण पड़ौस के देश उसके साथ संघर्ष मोल नहीं लेना चाहता। हमारा देश विशाल है फिर भी हम दब्बू बनकर देश की मानसिकता को संकुचित किये जा रहे हैं।

हमारे नौजवान सीमा पर अपना अतुल शौर्य दिखाते हैं। शत्रुओं को सीमा से खदेड़ने में अपना सर्वस्व लेगा देते हैं, लेकिन दिल्ली में बैठकर नेता उनके पराक्रम की उपेक्षा कर शत्रु राष्ट्र के अनुकूल निर्णय लेते हैं इ.स. 1965 में जब पाकिस्तान ने हमारे देश पर हमला किया था उसको चीन का भी अभय प्राप्त था ऐसी विकट परिस्थिति में हमारे सैनिकों ने पाकिस्तान के लाहौर तक का भूभाग पादाक्रांत कर लिया था। ऐसा लग रहा था कि जिस तरह कश्मीर का बहुत बड़ा हिस्सा पाकिस्तान ने हथिया लिया है उसी तरह लाहौर तक का भूभाग अपने कब्जे में भारत कर लेगा लेकिन ताशकंद समझौते में भारत मैदान की लड़ाई टेबल पर हार गया। यह एक अच्छा मौका था पाकव्याप्त कश्मीर को वापस लेने का यदि पाकिस्तान कश्मीर के प्रदेश वापिस देता है तो ही सेना पीछे हटेंगी इस तरह की शर्त यदि नेता पाक नेताओं के सामने रखते और कठोरता से इस निर्णय पर स्थिर रहते तो उन्हें निरुपाय होकर 1948 में हथियाये कश्मीर को लौटाना ही पड़ता। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। इसके विपरीत हमारे सैकड़ों सैनिक मारे गये और पाकिस्तान के विजित प्रदेश को भी छोड़ना पड़ा।

कुछ दिन पूर्व मई महीने में चीन के प्रधनमंत्री ली केकि यांग भारत आये इसके कुछ दिन पूर्व ही चीन सेना ने लद्दाख में 19 किलोमीटर भीतर प्रवेश किया, सेना ने अपने अधिकार में रहकर जितना विरोध करना चाहिए था किया लेकिन चीन अपनी खुराफातों से बाज नहीं आया। यहा भारत सरकार को जितना कठोर विरोध दर्शाना चाहिए था, नहीं दिखा पाये। उसके कुछ दिन बाद ही चीन के प्रधानमंत्री देश के दौरे पर आये यह एक उनकी नीति थी जैसे 1962 में चाऊ एनलाई युद्ध से पूर्व आये थे और यहाँ के नेताओं की देहबोली पढ़कर गये थे और कुछ दिन बाद आक्रमण कर दिया था उसी प्रकार ली केकि यांग चीनी सैनिकों के अतिक्रमण के पश्चात् भारत के नेताओं पर इसका क्या असर होता है और उनकी क्या प्रतिक्रिया दिखाई देती है यह परखने के लिए ही चीनी प्रधानमंत्री आये थे। लेकिन सरकार की ओर से जैसी कठोर प्रतिक्रिया दिखाई जानी चाहिए थी वह दिखाई नहीं गयी। चीन जैसा चालाक और दगावाज पूरे विश्व में अन्य कोई देश नहीं है। यूपीए सरकार को उसी की हरकत में जवाब देना चाहिए था, लेकिन दे नहीं पाये। जिस तरह बिल्ली के आगे कबूतर आँख बन्द कर लेता है वैसे ही हमारे नेता चीन के आगे सहमकर बैठ जाते हैं यह शक्ति देश को शोभा देने वाली बात नहीं है। उसकी हर हरकत पर पैनी नजर रखी जानी चाहिए वह नहीं रखी जाती। चीन के प्रधानमंत्री ने टेबल पर जो चालाकी करनी थी वह कर दी। आज चीन के कब्जे में भारत की 45000 वर्ग किलोमीटर भूमि दबी पड़ी है, मानसरोवर और लद्दाख के भूप्रदेश उसी के कब्जे में हैं प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने चीनी प्रधानमंत्री के सामने एक बार भी उस सम्बंध में बात नहीं उठाई इसके विपरीत ली केकि यांग ने अतिक्रमण की बात को टालते हुए और सीमा विवाद को नजर अंदाज करते हुए तथा ब्रह्मपुत्र नदी और मानसरोवर की यात्रा के समझौते गोलमोल रखकर अपने काल की भारत में निर्यात के सम्बन्ध में प्रस्ताव मनवा लिये। यह

तो मैदान और टेबल दोनों पर हारने जैसा हुआ। अगर हम शत्रु पड़ौसियों के साथ इसी तरह पेश आते रहेंगे तो नित नये पड़ौसी शत्रु निर्माण होते रहेंगे इसमें कोई सन्देह नहीं है। हम अपनी अत्युदारता और अतिशालीनता के कारण अपने चारों ओर शत्रु निर्माण कर रहे हैं। जापान चीन के सामने उतना शक्तिशाली न होते हुए भी अपनी दृढ़ता से चीन का सामना कर रहा है। वियतनाम फिलीपीन्स और दक्षिण कोरिया जैसे छोटे देश चीन को अपनी सीमा में रहने की चेतावनी दे रहे हैं, लेकिन भारतवर्ष इतना विशाल और शक्तिशाली होकर भी परिणाम भय के कारण कमजोर दिखाई दे रहा है।

जो भी हो और जो परिणाम हो भारत के नेताओं को पारम्परिक भयग्रस्तता को छोड़कर जो जैसा उसके साथ वैसी नीति अपनाते हुए चलना होगा। आप काट नहीं सकते तो कम से कम फुत्कार तो सकते हो। शत्रु को भयग्रस्त तो कर सकते हो। हम इस "शठेशाठ्यम्" की नीति के द्वारा ही पड़ौसियों पर अपनी धाक जमा सकते हैं तब यह देश मानसिक ओर भौतिक दृष्टि से और शक्तिशाली होगा।

❑❑

इमाम और मुअज्जीन को भत्ता असंवैधानिक

(आई.डी. गुलाटी)

अदालत में पश्चिम बंगाल सरकार को एक और झटका लगा है। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार की ओर से इमामों और मोज्जिनों को भत्ता देने को असंवैधानिक बताया है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अप्रैल 2012 के इमामों के लिये 2500 रुपये प्रतिमाह भत्ता देने का ऐलान किया था। बाद में मोज्जिनों को भी 1500 रुपये भत्ता देने का ऐलान किया गया।

एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए यह फैसला सुनाया गया। न्यायाधीश पी. के चट्टोपाध्याय और न्यायाधीश एमपी श्रीवास्तव की खण्डपीठ ने यह आदेश दिया। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महासचिव असीम सरकार ने राज्य सरकार के फैसले का विरोध करते हुए याचिका दायर की थी।

अदालत की ओर से कहा गया है कि राज्य सरकार की ओर से भत्ता देने की घोषणा संविधान की धारा 14 और 15(1) का उल्लंघन है इसके तहत किसी नागरिक के साथ जाति, धर्म सहित दूसरी बातों के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता।

कुछ मुस्लिमों ने इसका स्वागत किया है। उनका कहना है कि इमामों के इस्लामिक नियमों के अनुसार राज्य सरकार से मानदेय नहीं लेना चाहिये बल्कि वक्फ बोर्ड को इसकी व्यवस्था करनी चाहिये।

प्रतिक्रिया

- कोलकाता उच्च न्यायालय का उपरोक्त निर्णय अति प्रशंसनीय और सराहनीय है।

- भाजपा के प्रदेश महासचिव असीम सरकार बधाई के पात्र हैं जिन्होंने याचिका दायर की थी।

- भाजपा के दिल्ली प्रदेश और केरल राज्य के सक्रिय नेताओं को भी नई दिल्ली तथा तिरूअनंतपुरम उच्च न्यायालयों में ऐसी याचिकाएं शीघ्र दायर करनी चाहिए, क्योंकि वहां की सरकारें कई सालों से प्रतिमाह भत्ता/वेतन आदि दे रही हैं जिसे बन्द कराया जाए।

❑❑

सत्य की महिमा

(उत्तरा नेरुर्कर, बंगलौर, मो. ०९८४५०५८३१०)

सत्य धर्म के मार्ग पर चलने वाले के लिए कितना महत्त्वपूर्ण है, इसका अनुमान हम सभी को है। एक वेद-मन्त्र इसको बहुत ही दृढ़ता से कहता है, और सत्य में निहित बल का वर्णन करता है। उसी का विस्तृत वर्णन मैंने इस लेख में दिया है।

ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्-

ऋतस्य धीतिर्वृजनानि हन्ति।

ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द

कर्णा बुधानः शुचमान आयोः॥ ऋक्० ४।२३।८॥

देवता – **इन्द्र ऋतदेवाः**

शब्द-व्याख्या

यह मन्त्र निरु० १०।२६ में व्याख्यात है। वहां इसका वर्षा के विषय में आधिदैविक अर्थ किया गया है। इसलिए उसके पते मैंने नीचे नहीं दिए हैं।

शब्द (विभक्ति/पुरुष। वचन)	**धातु + मुख्य उपसर्ग / प्रत्यय**	**अर्थ**
ऋतस्य (६।१)	ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वादिः) + क्त (उणादिः ३।८९ - ऋच्छत्यात्मानं प्राप्नोतीति ऋतं यथार्थम् वा)	सत्य की
हि	अव्यय	निश्चय से
शुरुधः (१।३)	याः शु=सद्यो रुन्धन्ति ताः स्वसेनाः (महर्षि-दयानन्द-व्याख्या)	सेनाएं
सन्ति (१।३)	अस भुवि	होती हैं
पूर्वीः (१।३)	-	अनादिकालीन
ऋतस्य (६।१)	पूर्ववत्	सत्य का
धीतिः (१।१)	डुधाञ् धारणपोषणयोः + क्तिन्, धीः कर्मनाम (निघ० २।५) धीराः प्रज्ञानवन्तो ध्यानवन्तः (निरु० ४।९) अतः धारणावती प्रज्ञा	ज्ञान अथवा आचरण
वृजनानि (२।३)	वृजी वर्जने (अदादिः+चुरादिः)	वर्जनीय/त्याजनीय दोषों को
हन्ति (१।१)	हन हिंसागत्योः (अदादिः)	नष्ट करता है
ऋतस्य (६।१)	पूर्ववत्	सत्य का
श्लोकः (१।१)	श्लोकृ सङ्घाते (भ्वादिः) यत्र अक्षराणां सङ्घातो भवति	वाणी
बधिरा (= बधिराणि २।३,	बध बन्धने (भ्वादिः), बन्ध बन्धने	बहरे

व्यत्ययेन)	(क्र्यादिः) वा, बद्धश्रोत्रः (निरु० १०।२६)	
ततर्द (१।१)	उतृदिर् हिंसानादरयोः (रुधादिः)	फाड़ देती है
कर्णा (= कर्णानि २।३, व्यत्ययेन)	कृ विक्षेपे (तुदादिः) कीर्यते विस्तीर्यते शब्दोऽत्र	कानों को
बुधानः (१।१)	बुधिर् बोधने (भ्वादिः) + शानच् णिजर्थे	जनाता हुआ
शुचमानः (१।१)	ईशुचिर् पूतीभावे (दिवादिः)	पवित्र करता हुआ
आयोः (६।१)	आङ् + यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदादिः)	आयु का

अन्वयः – ऋतस्य हि शुरुधः पूर्वीः सन्ति । ऋतस्य धीतिर्वृजनानि हन्ति । ऋतस्य श्लोको बुधान आयोः शुचमानो बधिराणि कर्णानि ततर्द ।

भाषार्थः – सत्य की सेनाएं बहुत पुरानी हैं । सत्य की प्रज्ञा और आचरण दोषों को नष्ट करता है । सत्य वचन सत्य जनाते हुए और आयु को पवित्र करते हुए, बहरे कानों को जैसे फाड़ देते हैं – जो उनको नहीं सुनना चाहता, उसको भी सुनने पड़ते हैं ।

भावार्थः – वैदिक मन्त्रों की परम्परा में, इस अकेले मन्त्र के भी अनेकों उपदेश हैं –

१. सत्य आजकल में उत्पन्न नहीं हुआ है । वह तो अनादि काल से चला आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा, क्योंकि जो है, वही सत्य है और परमात्मा स्वयं सत्य-स्वरूप हैं ।

२. सत्य की उपमा सेनाओं से दी गई है, क्योंकि सत्य बहुत बलशाली होता है, झूठ और अन्य दुष्प्रवृत्तियों और दुर्जनों पर आक्रमण करके उनको हराता है । आरम्भ में हो सकता है कि सत्य हारता हुआ दिखाई पड़े, और झूठ जीतता हुआ, परन्तु अन्त में, परमात्मा के आदेश से, ब्रह्माण्ड की प्रत्येक शक्ति सत्य के साथ खड़ी हो जाती है । यही महाभारत में चरित्रार्थ हुआ ।

३. सत्य ज्ञान और आचरण से मनुष्य के स्वदोष निवृत्त होते हैं । महर्षि ने सत्य की परिभाषा दी है – जो जैसा है, उसे वैसा ही जानना, मानना व बोलना सत्य है । इसके विपरीत जो जैसा नहीं है, उसे मानने या बोलने से, हममें दोष उत्पन्न होते हैं, जो हमारे पतन का कारण बनते हैं । असत्य से जनित अविद्या से हम इस शरीर में बन्धे रहते हैं ।

४. सत्य से वस्तु-स्थिति का बोध होता है – सच्चा ज्ञान होता है । झूठे ज्ञान तो अनेक होते हैं, परन्तु सत्य सर्वदा एक होता है । मूर्ति-पूजा से यह सम्यक् उदाहृत होता है – परमात्मा की झूठी मूर्तियां या आकार तो अनेक हैं, परन्तु निराकार सत्य परमात्मा तो एक ही है !

५. सत्य से जीवन शुद्ध होता है । मैंने असत्य को सही मानने वालों के अनेकों तर्क सुने हैं – दूसरे का हृदय न तोड़ना, दूसरे की रक्षा करना, आदि, आदि – परन्तु सत्य के गुणों को वे नहीं समझ रहें हैं । सत्य ऐसा धर्म है जिससे मनुष्य अन्दर तक पवित्र हो जाता है । इसीलिए इसको देवयान, या मोक्ष के लिए अनिवार्य माना है – **"सत्येन पन्था विततो देवयानः (मुण्डक० ३।१।६)"** ।

६. सत्य इतना बलशाली है कि उसको न चाहने वाले को भी उसके सामने नतमस्तक होना पड़ता है – **"सत्यमेव जयति नानृतम् (मुण्डक० ३।१।६)"** । जैसे, महर्षि दयानन्द के सामने ईसाइयों और मुसलमानों ने भी शीश नवाया ।

इस प्रकार, मन्त्र से हमें शिक्षा मिलती है कि, मनुष्यों के लिए, सत्य एक ऐसा अनिवार्य धर्म है, जो व्यवहार में लाने में सबसे कठिन होता है, परन्तु जिसमें दूसरी ओर, ब्रह्माण्ड की दिव्य सेनाएं हमारी ओर से लड़ती हैं । सत्य से हमें आत्मिक बल मिलता है और हमारे स्वास्थ्य में भी वृद्धि होती है । क्या यह भी एक कारण है कि आधुनिक युग में लोगों को इतनी भयंकर बिमारियों ने घेर रखा है ?!

आर./आर. नं० १६३३०/६७ जून २०१४
Post in Delhi R.M.S
०१-०७/६/२०१४

जून 2014

रजिस्टर्ड नं० DL (DG -11)/8029/2012-14
लाईसेन्स नं० यू (डी०एन०) १४४/२०१२-१४
Licenced to post without prepayment
Licence No. U (DN) 144/2012-14

पाठकों से निवेदन

१. अपने पत्रों में अपनी ग्राहक संख्या अवश्य ही लिखा करें, अन्यथा कार्यवाही सम्भव नहीं होगी।

२. १५ तारीख तक प्रतीक्षा करके ही दुबारा अंक मँगाएं, यदि अंक न पहुँचा हो।

३. यदि आप अपना पता बदलवायें तो यह ध्यान रखें कि बदले हुए पते पर अंक-प्रेषण एक माह बाद आरम्भ होगा।

४. अंक के रेपर पर अपना पता चैक कर लिया करें। यदि कोई त्रुटि हो, तो सूचना दे दिया करें।

५. जिन ग्राहकों का शुल्क समाप्त है, अविलम्ब भेजने की कृपा करें।

दिनेश कुमार शास्त्री
कार्यालय व्यवस्थापक
मो०-९६५०५२२७७८

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द, सुन्दर आकर्षक छपाई एवं (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, खारी बावली, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

श्री पुस्तक/पत्रिका

श्री सेवा में.....
ग्राम.....
डा० .....
जिला.....

प्रकाशक : धर्मपाल आर्य, ४२७, मन्दिर वाली गली, नया बांस, खारी बावली, दिल्ली-६
मुद्रक : ईरानियन आर्ट प्रिण्टर्स, १५३४, गली कासिमजान, बल्लीमारान, दिल्ली-६